राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 40.00 संख्या 185
कोहराम
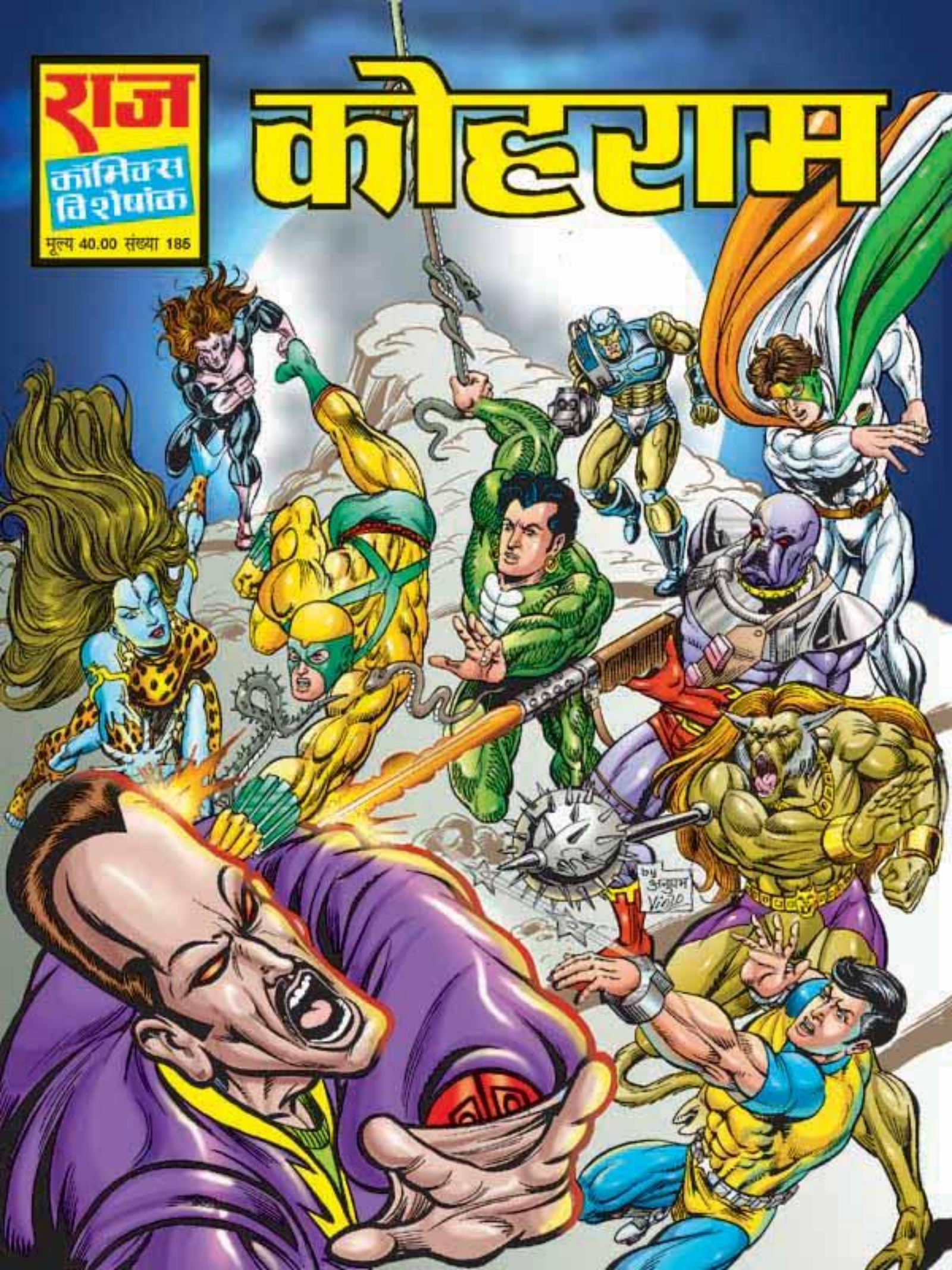
देवताओं की सृष्टि अपूर्ण है! बहुत कमियां हैं उसमें! देवताओं ने जीवन चक्र के उच्चतम स्तर पर मानव की रचना की है, जो इस ग्रह पर राज करता है! झूठ, छल-कपट, लालच, ईर्ष्या और आपराधिक प्रवृत्ति से भरा यह मानव इस ग्रह को उन्नति की राह पर ले जाने के बजाय विनाश के रास्ते पर ले जा रहा है! इसलिए खत्म होना पड़ेगा देवताओं की इस सृष्टि को, ताकि इस ग्रह पर मैं हरूओं की सृष्टि की रचना कर सकूं! ऐसी सृष्टि जो हर चीज में देवताओं की सृष्टि से ज्यादा श्रेष्ठ होगी! चाहे इसके लिए मुझे करना पड़े विनाश या मचाना पड़े...
कोहराम
संजय गुप्ता की पेशकश
कथा: जॉली सिन्हा
चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विनोद कुमार
विट्ठल कांबले
सुलेख एवं
रंग संयोजन: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

महानगर और राजनगर के बीच में स्थित अक्सर सुनसान रहने वाली पहाड़ियों पर आज काफी हलचल थी! सब की निगाहें तारों से भरे हुए काले आसमान पर टिकी हुई थीं-
सबकी एक ही चीज की तलाश थी-
मिलेनियम कॉमेट, यानी सहस्त्राब्दी पुच्छल तारा अब तक नजर क्यों नहीं आ रहा है!
इतने बेसब्र मत बनो प्रोफेसर सब्बरवाल! वर्ना सिर पर जो दो-चार सफेद बाल बचे हैं, उनको भी टेंशन में नोच डालोगे!
हमारी गणना के हिसाब से इस पुच्छल तारे ने लगभग पचास लाख साल पहले हमारी पृथ्वी को विजिट किया था! अब जो चीज पचास लाख साल बाद आ रही है, उसके लिए कुछ घंटों का इंतजार क्या मायने रखता है!
हाँ! ये तो है! पर इस गणना पर मुझे यकीन नहीं है! पचास लाख साल लम्बा चक्कर बहुत होता है! एक लाख साल तक तो मैं मान लेता, पर...
पर को छोड़, सब्बरवाल, और रेडियो टेलिस्कोप की स्क्रीन पर नजर गड़ा ले! मिलेनियम कॉमेट अभी-अभी हमारी चांद पर स्थित टेलिस्कोप की रेंज में आ गया है!
पींप पींप
वाऊ! ब्यूटिफुल सेठी! यह पुच्छल तारा पृथ्वी के इतनी पास से गुजरेगा, जितनी पास से आज तक कुछ भी नहीं गुजरा! गोल्डेन चांस है पुच्छल तारे के रहस्यमय केंद्र के अध्ययन का! अपनी टेलिस्कोप को इसके केंद्र पर फिक्स कर दो!
संसारभर के वैज्ञानिकों के साथ-साथ-
संसार के हर उस शख्स की आंखें, आकाश पर ही जमी थीं, जिसके इलाके से पुच्छल तारा नजर आ रहा था-
वाह! ये भगवान का तरीका लगता है हमको हैप्पी मिलेनियम कहने का!
ये तो चांद से भी ज्यादा चमक रहा है! और इसकी पूंछ तो देखो! क्या लंबाई है!

लेकिन ऐसे भी कई शख्स थे जिनके पास यह नजारा देखने का समय नहीं था-
क्योंकि चाहे कोई भी शताब्दी हो-
या कोई भी सहस्त्राब्दी हो-
या कोई भी खास मौका हो-
DEPARTMENTAL STORE
अपराध ही ना कभी बंद नहीं होते-
और न ही अपराध विनाशकों को चैन लेने देते हैं-

अपराध और न्याय की यह लड़ाई तब तक चलती रहेगी-

जब तक इंसान इस पृथ्वी पर मौजूद है-

या जब तक यह सृष्टि मौजूद है-
क्योंकि
बुराई को जड़ से खत्म करने के लिए इस पूरी वर्तमान सृष्टि को ही बदलना पड़ेगा-

और इसके लिए शायद किसी नई सृष्टि के रचयिता को इस ग्रह पर उतरना पड़ेगा-

हर इंसान इस रहस्यमय पुच्छल तारे मिलेनियम कॉमेट को जी भर के देखना चाहता था। लेकिन कुछ लोग इस नज़ारे को हमेशा के लिए कैद कर लेना चाहते थे-
प्रोफेशनल फोटोग्राफर रमेश रवन्ना भी ऐसे ही लोगों में से एक था-
एकदम परफेक्ट जगह है। एक तो इस रेगिस्तान में मुझे पुच्छल तारे का बहुत बढ़िया व्यू मिलेगा, और दूसरे मुझे यहां पर डिस्टर्ब करने वाला दूर-दूर तक कोई भी नहीं है।

वहां से दूर- पहाड़ियों पर भी मिलेनियम कॉमेट के इस रूप को भी कैद किया जा रहा था, और साथ ही साथ उसकी जानकारी को भी-
आश्चर्य जनक! एमेजिंग! डॉक्टर सेठी, जल्दी इधर आओ! देखो, चांद पर मौजूद 'लूनर टेलिस्कोप' कॉमेट के केंद्र में क्या दिखा रहा है!
ओ माई गॉड! यह तो किसी प्राणी की आकृति लग रही है! परंतु किसी जीवन का संकेत देने वाले हमारे यंत्र यानी 'बॉयोलॉजिकल स्कैनर' तो कुछ भी नहीं बता रहे हैं!
लेकिन ऊर्जा को मापने वाला मेरा यंत्र यानी 'एनर्जी रजिस्टर' बहुत कुछ बता रहा है डॉक्टर सेठी! यह देखो, इस यंत्र के सेंसर, हमारे सूर्य जैसे पांच हजार सूर्यों की ऊर्जा तक को माप सकते हैं! लेकिन इस कॉमेट के केंद्र की ऊर्जा को मापते समय इसकी सुई इससे भी आगे घूमना चाहती है!
यानी इस कॉमेट के केंद्र की आकृति जीवित नहीं है, बल्कि किसी ऊर्जा का एक रूप है! और उसमें पांच हजार सूर्यों से भी ज्यादा ऊर्जा है!
एग्जेक्टली! लेकिन इतनी ऊर्जा होने के बावजूद भी इस कॉमेट के केंद्र का तापमान शून्य से कई डिग्री कम है! यह पुच्छल तारा हमारे अनुमान से कहीं, कहीं ज्यादा रहस्यमय है!
वह तो है! लेकिन यह है क्या?
?
यह सवाल जवाब पाने की इच्छा से नहीं पूछा गया था-
लेकिन फिर भी इस सवाल का जवाब पूरी दुनिया को जल्दी ही मिलने वाला था-
रेगिस्तान में-
यह क्या हो रहा है? ऐसा लग रहा है जैसे कि इस पुच्छल तारे की गति एकाएक कम हो गई हो! पर ऐसा कैसे हो सकता है?

यह तो किसी ऐसे इंसान की तरह व्यवहार कर रहा है, जो रास्ते में चलते-चलते किसी चीज को ध्यान से देखने के लिए अपनी रफ्तार थोड़ी कम कर देता है!

अब...अब इसमें से एक टुकड़ा टूटकर अलग हो रहा है!

और...और मुझे लगता है कि यह टुकड़ा टूटकर मेरी तरफ ही आ रहा है!
अबे रमेश के बच्चे! किस बुरी घड़ी में तुझको इस पुच्छल तारे की फोटो लेने का ख्याल आया था?

उस टुकड़े के गिरने की गति, रमेश के भागने की गति से हजारों गुना ज्यादा थी–
मर गया! मर गया रे! इसके टकराते ही यह पूरा इलाका एक गड्ढा बन जाएगा!

लेकिन वह टुकड़ा रेतीली जमीन से टकराया नहीं, बल्कि–
अरे! अरे! यह तो ऐसे गिरा है, जैसे यह पुच्छल तारे का टुकड़ा न होकर किसी चिड़िया का पंख हो! यह आखिर चीज क्या है यार?

रत्न जैसे चमकते उस पत्थर पर दौड़ रहीं रंग-बिरंगी चमकती बिजलियां रमेश खन्ना को डराने के बजाय और आकर्षित कर रही थीं-
रमेश उस पत्थर की तरफ दो कदम बढ़ा-
क्लिक क्लिक
और ऐसा करते ही वह उस रोशनी के घेरे में आ गया, जो चमकते पत्थर से फूट-फूटकर वातावरण में चारों तरफ बिखर रही थीं-

और उसके कदम वहीं पर जमकर रह गए-
ओ माई गॉड! ओ माई गॉड! य... यह क्या? इ... इस पत्थर में से कुछ निकलकर मुझ पर लपक रहा है!
रमेश के कुछ समझ पाने से पहले ही-

ऊर्जा से बनी वह आकृति रमेश के शरीर को अपने आगोश में ले चुकी थी-
कुछ देर तक रमेश के तड़पते शरीर से चीखें उबलती रहीं-
और धीरे-धीरे वे चीखें-

एक विचित्र सी हंसी में बदल गईं! और साथ ही बदल गया था रमेश का रूप-
ह्वीं ह्वीं ह्वीं! वैसे अपने एनर्जी रूप को द्रव्य यानी मैटर में बदलने के लिए मुझे अपनी काफी शक्ति खर्च करनी पड़ती! लेकिन इस प्राणी के यहां पर मिल जाने से सब-कुछ आसान हो गया! मैंने इसके शरीर को अपना ही रूप दे दिया! वैसे यह तो होना ही था, क्योंकि हम कभी असफल नहीं होते!

आज से लगभग चालीस करोड़ 'पृथ्वी वर्ष' पहले हम देवताओं को चुनौती दे चुके हैं! हमने इसी ग्रह पर उनकी एक उस सृष्टि का विनाश कर डाला था, जिसको पृथ्वी की भाषा में शायद 'सरीसृप' कहते हैं! उसके बाद हम हर पचास लाख पृथ्वी वर्ष के अंतराल पर इस ग्रह को देखने आते रहते हैं, परंतु ऐसी पनपती सृष्टि इसी बार नजर आई है! यानी देवताओं ने इस पृथ्वी पर किसी नई सृष्टि की रचा है!

पिछली बार तो हमने एक उल्का पिंड के माध्यम से पृथ्वी पर सृष्टि का नाश किया था, परंतु इस बार मुझे इस ग्रह पर खुद उतरना पड़ा है, क्योंकि इस बार देवताओं से हमारी लड़ाई आर-पार की लड़ाई होगी! वे जीते तो हम इस क्षेत्र की तरफ कभी मुख नहीं करेंगे, और अगर हम जीते तो उनको ब्रह्मांड का यह भाग भी हमारी सृष्टि के लिए छोड़ना पड़ेगा!

अब देखना यह है कि देवताओं की यह नई सृष्टि कैसी है, और वह हलुओं की सृष्टि के सामने कैसे टिक पाती है! देवताओं से सीधे युद्ध में तो हमारा उनका और इस ब्रह्मांड का, सभी का विनाश हो जाएगा, इसीलिए यह युद्ध हमारे प्यादे लड़ेंगे! और चूंकि यहां पर हलुओं का प्यादा तो कोई है नहीं, इसीलिए देवताओं की सृष्टि में से ही किसी प्राणी को चुनकर अपना प्यादा बनाना पड़ेगा! जैसे यह प्राणी!
ले, देवताओं की सृष्टि के प्राणी, मुझसे हलुओं की शक्ति ऊर्जा प्राप्त कर, और इसी ऊर्जा से देवताओं की सृष्टि के विनाश का शुभारंभ कर दे!
हवीं हवीं हवीं! यह है हलुओं की शक्ति का एक विकराल रूप! अब जा, और सबसे पास में देवताओं की जो भी सृष्टि है, उसको सृष्टि के भी पहले वाले रूप में पहुंचा दे! नष्ट कर दे! जा!

उस रेगिस्तान के सबसे पास जो 'सृष्टि' मौजूद थी, वह महानगर नाम का शहर था! और इस सृष्टि में देवताओं के अलावा मानवों का योगदान भी शामिल था! इस नगर को नष्ट करना भी कोई हंसी खेल नहीं था-

क्योंकि महानगर का संरक्षक था- नागराज-

मिल गया! मुझे वह 'कंप्यूटर सॉफ्टवेयर' मिल गया, जिसको इस कंप्यूटर प्रोग्रामिंग कंपनी ने करोड़ों रुपए की लागत से रक्षा मंत्रालय के लिए बनाया है! हम देश के गद्दार नहीं हैं, इसीलिए इसको किसी दुश्मन देश को नहीं बेचेंगे! लेकिन अगर इस कंपनी को यह सॉफ्टवेयर वापस चाहिए तो करोड़ों का यह सॉफ्टवेयर हम सिर्फ पचास लाख में वापस कर देंगे!

पचास लाख तो नहीं...

कोहराम

ऐसा क्यों ? तूने मुझे अपना गुलाम कब बनाया, यह मुझे याद नहीं आ रहा है !
मैंने तुझे गुलाम नहीं बनाया है नागराज, बल्कि उनको गुलाम बनाया है...

...जिनका तू गुलाम है ! यानी कि प्यारे-प्यारे छोटे-छोटे मुलायम चमड़ी वाले बच्चे !
अब आगे बढ़, और जल ! वरना एक ही धमाके से इसकी खोपड़ी में सुरंग बन जाएगी !
BLUE
मैं अपनी फुंकार छोड़कर इस बच्ची को पकड़े आदमी को बेहोश कर तो सकता हूं, लेकिन वह फुंकार इस छोटी बच्ची पर घातक असर भी कर सकती है !

फिलहाल जलने के सिवाय और कोई चारा नहीं है ! लेकिन जलने से पहले मैं अपने प्लान पर काम शुरू कर दूं !
इधर नागराज की कलाईयों से नागरस्सी निकलकर नीचे गिरनी शुरू हुई, और उधर नागराज का शरीर झुलसना शुरू हो गया–

नहीं ! नागराज अंकल को मत जलाओ ! मुझे मार डालो ! पर नागराज को मत जलाओ !
ओए, चुप ! तुझे मारकर हमको क्या मिलेगा !

नागरस्सी, टेबलों की आड़ में छिपती हुई अपना रास्ता तलाशती जा रही थी–

और उधर नागराज चकित होता जा रहा था-
कमाल है! यह आग इतनी देर से मेरे शरीर से टकराते रहने के बावजूद मुझे नुकसान नहीं पहुंचा रही है! ऐसा क्यों?
खैर! इस पर मैं बाद में गौर करूंगा! अभी तो 'सर्प रस्सी' से मुझे जो मानसिक संकेत मिल रहे हैं, उसके अनुसार सर्प रस्सी उस गुंडे के पैर से जाकर चुपचाप लिपट गई है, जो बच्ची को बंधक बनाए हुए है!... अब मुझे इस रस्सी को सिर्फ एक मामूली सा झटका देना है!
और वह गुंडा नीचे आ गिरेगा! और इसके बाद का काम...
...एकदम आसान है!
फ़ू
ऊ
ऊ
?

धड़ाक
मुझे ऐसे कमीनों से सख्त नफरत है, जो अपनी जान बचाने के लिए बच्चों का इस्तेमाल करते हैं! इस बार तो मैं तुझे तेरी हड्डियां बख्श दे रहा हूं। पर आइन्दा ऐसा कभी किया, तो तेरे बदन से तेरा पिंजर ही बाहर निकाल दूंगा!
सॉफ्ट वेयर!
र... रख दिया! रख दिया! जगह पर रख दिया!
शाबाश! अब मैं तुझे और तेरे गैंग को सही जगह पर पहुंचा दूं!
पुलिस लॉक-अप में!
ठक्क
अब जाओ, और अपने जुर्म बताकर अपने आपको खुद पुलिस के हवाले कर दो! जब तक ऐसा नहीं करोगे, तब तक मेरा एक सर्प तुम सबके गले को कसे रखेगा! जाओ!
सबके जाने के बाद-
अब सिर्फ तुझे तेरे घर पर पहुंचाना है! पर मुझे यह समझ में अभी तक नहीं आया कि आग में मैं झुलसा क्यों नहीं?

वह मेरे कारण नागराज! शीतनागकुमार की शीत शक्तियों के रहते भला किसी आग की मजाल है, जो तुमको आंच भी दे सके! अरे, तुम्हारा शरीर अब मेरा घर है नागराज, और मैं अपने घर को कोई भी नुकसान पहुंचने नहीं दूंगा!
ओह! यह तो मुझे पहले ही समझ जाना चाहिए था!
STAIRS
खैर, देर से ही, पर समझा तो सही SSS
अरे! यह क्या हो रहा है! पूरी बिल्डिंग थरथरा क्यों रही है?
हमको तुरन्त बाहर निकलना होगा! और इसका सबसे अच्छा तरीका...
...नागरस्सी है!
अच्छा! तो बिल्डिंग के टूट-टूटकर गिरने का कारण यह है! पर यह है क्या? ऐसा नमूना कम से कम भगवान तो नहीं बना सकता!
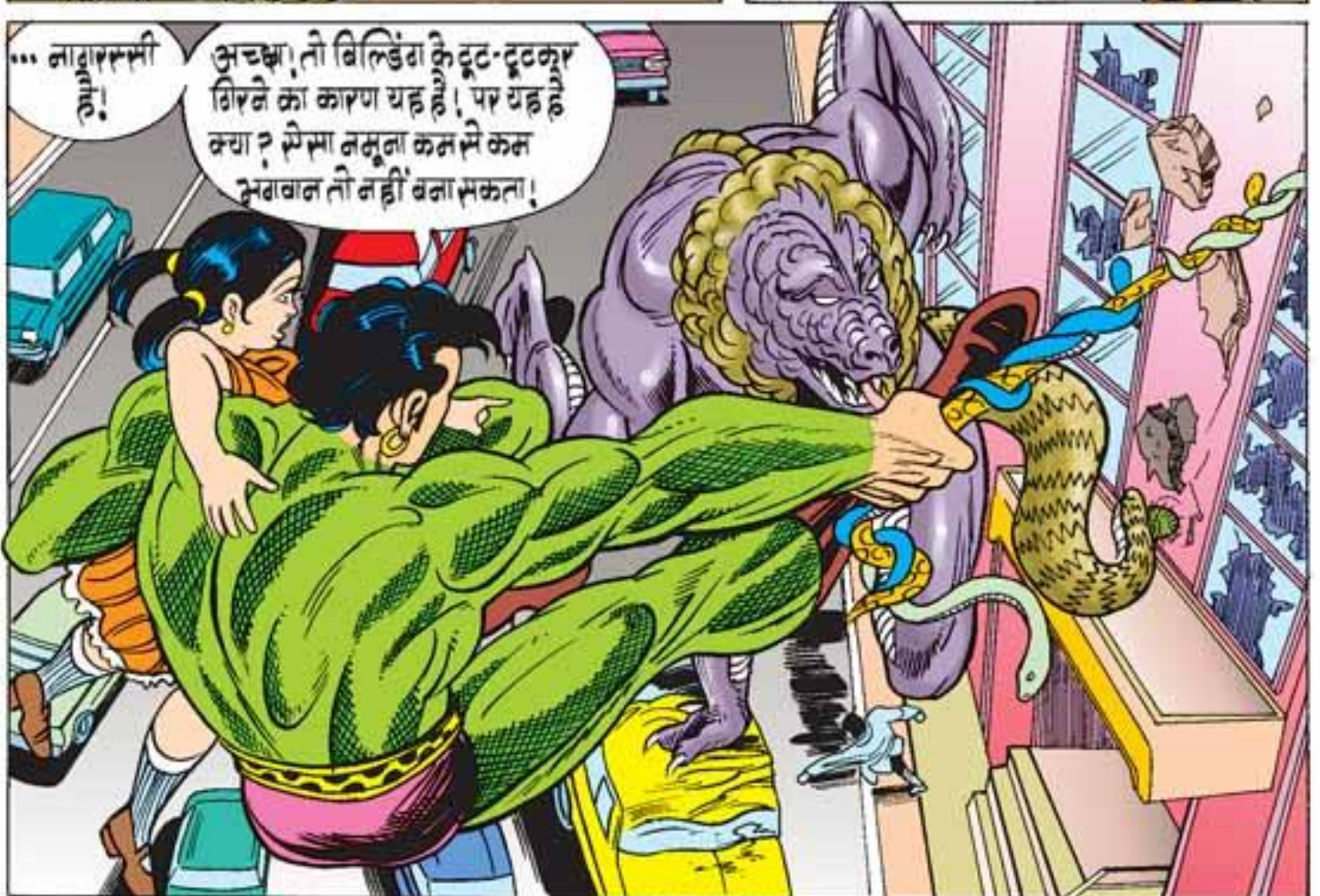
ये अपनी पूंछ पर लगे थरथराते वायब्रेटर को इमारत से सटाकर ऐसे कंपन पैदा कर रहा है, जिनसे बिल्डिंग गिर रही है! ऐसी थरथराती दुम तो सिर्फ रेगिस्तानी इलाकों में पाए जाने वाले 'रैटलर' सांपों में मिलती है! पर इस प्राणी का रूप तो किसी भी कोण से रैटलर सांप से मेल नहीं खाता, खैर, जो भी हो...
...मुझे इसको रोकना होगा!
सुनो, इस बच्ची को अपना पता मालूम है! इसको इसके घर पहुंचा देना!
ठीक है, नागराज! मैं तो वैसे भी यहां से भाग ही रहा था! अब इसके घर की तरफ भागलूंगा!
नागराज उस सर्प प्राणी की तरफ घूमा, और वह दृश्य देखकर उसका पूरा शरीर सिहर उठा-
ओह! देखकर भी यकीन नहीं हो रहा है! इसने अपने मुख से भीषण ऊष्मा लहरें निकालकर पूरी इमारत के मलबे को ऐसे विखंडित कर दिया है, जैसे कपूर की टिकिया हवा में घुल जाती है!
यह तो शुक्र है कि इस सरकारी बिल्डिंग में रात की वजह से कोई भी नहीं था! वर्ना न जाने कितनी जानें एक साथ चली जातीं!

अब सबसे पहला काम इसको इमारतों और नागरिकों से दूर हटाना है! और इसके विशाल-काय शरीर को दूर हटाने का काम सिर्फ मेरे 'ध्वंसक सर्प' ही कर सकते हैं!
ध्वंसक सर्प तीन-तीन के गुच्छों में बंधकर, सर्प प्राणी के शरीर से टकराए-
बड़ाम
धड़ाक
बड़ाक
बड़ाम
और इन भीषण धमाकों ने सर्प प्राणी को पीछे धकेल दिया-
अहा! यह देवताओं और हरूओं की सृष्टि के बीच में पहला संघर्ष है! और यह पहली लड़ाई तो 'हरू-शक्ति ही जीतेगी! सिर्फ एक मानव मेरी हरू शक्ति को हरा नहीं सकता!
यह युद्ध देखने में मजा आएगा।
नागराज के लिए यह युद्ध कम से कम मजेदार तो नहीं था-
हा हा हा
आऽऽह! इसकी भीषण ज्वाला मुझसे कम से कम एक फुट की दूरी से गुजरी है! लेकिन फिर भी ऐसा लग रहा है, जैसे सारा शरीर किसी भट्ठी के अन्दर बंद रहा हो!
ऐसी किसी ऊर्जा का सामना तो मैंने पहले कभी नहीं किया! यह बहुत शक्ति शाली है! यह लड़ाई जल्दी से जल्दी खत्म करनी होगी!
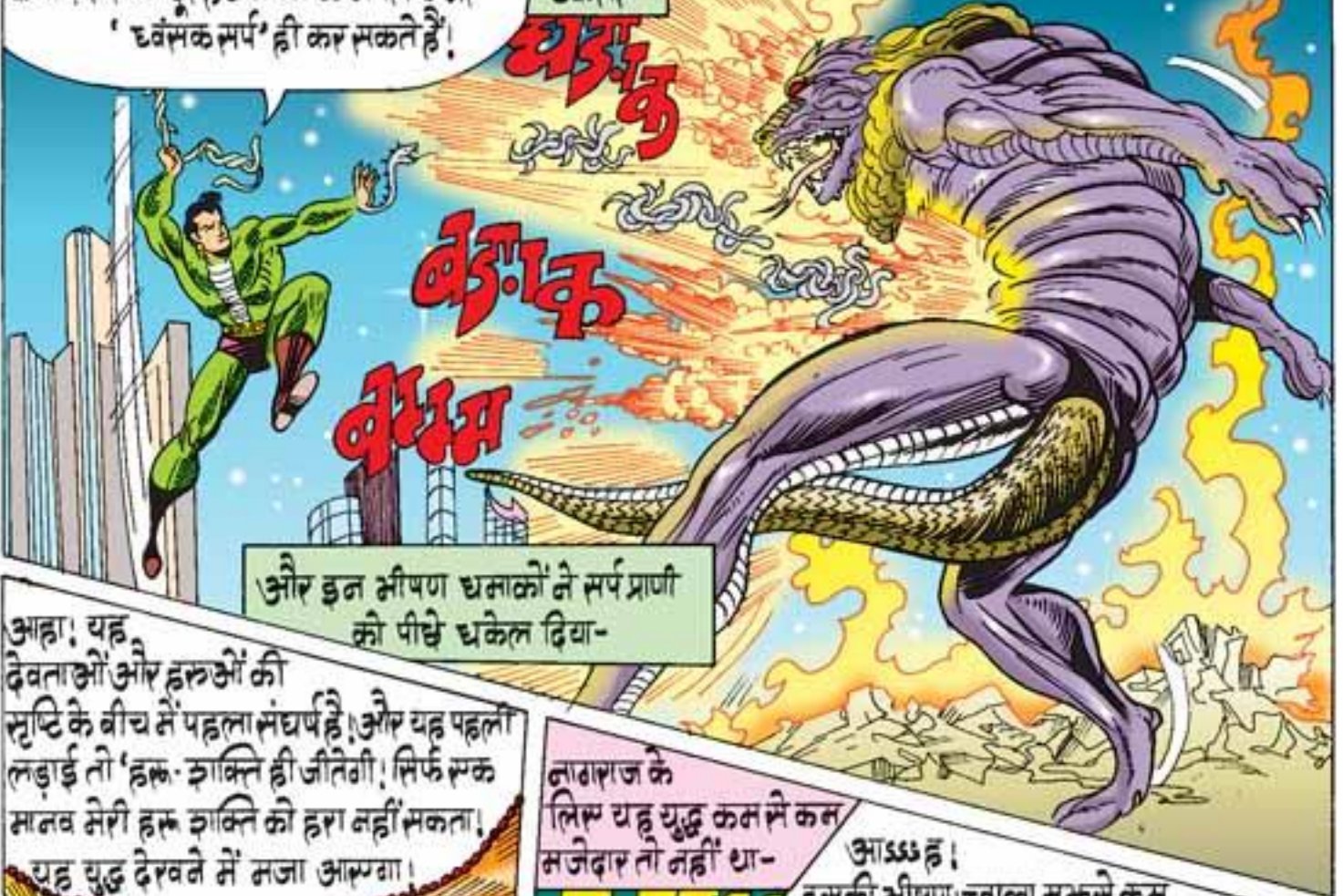
और यह काम इसके खुले मुंह में ध्वंसक सर्प डालकर किया जा सकता है! ठीक वैसे ही जैसे कुछ दिनों पहले मैंने 'वेदाचार्य भविष्य धाम' में एक विशालकाय बिच्छू को बेहोश करके किया था! बस, इस बार का वार उस वार से कई गुना ज्यादा शक्तिशाली होगा!

ध्वंसक सर्पों की टोली सर्प प्राणी के खुले मुख के अन्दर घुसती चली गई-

और एक कर्णभेदी धमाके ने सर्प प्राणी के सिर के चिथड़े उड़ा दिए-

ओह! इसका सिर फटने से इसके शरीर के अन्दर से ऊर्जा की लहरें भी बाहर निकल रही हैं! खैर, यह प्राणी तो नष्ट हो गया!

उस 'सर्प प्राणी' को किसी किस्म का आदेश मिल चुका था! इस बार उसके मुख से निकली ऊष्मा लहर से बचने के लिए नागराज एक तरफ फिर से उछला—

लेकिन इस बार वह सर्प-प्राणी की चाल का शिकार बन गया—

सर्प-प्राणी की दुम पर उगे, 'वाइब्रेटर' से वैसा ही एक और 'कंपक' निकलकर नागराज के शरीर से आ चिपका—

और नागराज का शरीर किसी चक्रवाती तूफान में घिरे सूखे पत्ते की तरह थर-थर कांपने लगा—

आऽऽऽह! यह क्या हो रहा है? मेरा पूरा शरीर अन्दर तक बुरी तरह से थरथरा रहा है! और... और इस थरथराहट के कारण मेरे सूक्ष्म सर्प भी आपस में ही टकराकर... नष्ट हो ... रहे हैं! ...

... क... कुछ समझ में नहीं आ रहा है... कि म... मैं क्या करूं! यह क... कंपकनी मेरे... शरीर... से अलग हो... हो ही नहीं पा रहा है! औ... और मेरे... पे... पैरों से ज... जो क... कंपन जमीन... में जा रहे हैं... उसके कारण... ज... जमीन भी ट... टूट रही है! और... मेरा... मेरा शरीर इसमें धंस रहा है!

म... मैं इसको... रोक नहीं... पा रहा हूं! क्या यही जमीन ... मेरी जिन्दा कब्र बन जाएगी!

नागराज ने अपने शरीर को जमीन में न धंसने देने के लिए जी-तोड़ कोशिश शुरू कर दी! लेकिन न तो कंपन रुके और न ही उसका धंसना—

आऽऽऽह! अब तो मेरा दम भी घुट रहा है! मेरे फेफड़ों में भरी जीवनदायी वायु तो पहले ही कंपनों के कारण बाहर निकल चुकी है! म... मुझे बाहर निकलना ही होगा! निकलना ही होगा!

आहा! यह मैं जमीन में लगभग सौ मीटर नीचे पहुंच गया हूं! और इस स्तर पर भूमिगत जल का स्रोत आ जाता है! पानी के अन्दर मेरा शरीर डूबते ही मुझे थोड़ा आराम तो अवश्य मिलेगा, क्योंकि हवा से कहीं ज्यादा ठोस माध्यम होने के कारण, पानी मेरे शरीर के कंपनों को शिथिल कर देगा, अब मैं ठीक से सोच समझ सकता हूं!... यह 'कंपक' मेरे शरीर से नहीं बल्कि मेरी खाल से चिपका हुआ है!

अब मेरे फेफड़ों में हवा भी लगभग खत्म हो चुकी है, और केंचुली बदलने के बाद जो मुझको कमजोरी लगती है, वह भी लग रही है। और यह कमजोरी थोड़ी इसलिए भी बढ़ गई है, क्योंकि इस 'कंपक' की वजह से मेरे कई सूक्ष्म सर्प नष्ट हो गए हैं!

ऐसी हालत में मुझे जमीन के बाहर तेजी से निकलने में जो ऊर्जा खर्च करनी पड़ेगी...

अगले ही पल - अपनी शक्ति समेट रहे नागराज को भस्म करने के लिए एक ऊष्मा किरण, उसकी तरफ लपक पड़ी -
लेकिन उस किरण की ऊष्मा, उस बर्फ की मोटी दीवार को भाप बनाने में खर्च हो गई, जिसे शीत नागकुमार ने रास्ते में खड़ा कर दिया था -
शीत नागकुमार अपनी सारी बर्फीली शक्तियां खर्च कर देगा, पर नागराज का बाल तक झुलसने नहीं देगा।
वैसे तुझे शीत नागकुमार इस लायक छोड़ेगा ही नहीं कि तू नागराज को नुकसान पहुंचा सके।
उस बर्फीली कैद ने सर्प प्राणी के मुख को बन्द कर ऊष्मा लहर निकलने का रास्ता ही रोक दिया -
लेकिन ज्यादा देर तक नहीं! बर्फीली कैद तड़तड़ा कर टूट गई, और टुकड़े वापस शीत नागकुमार की तरफ आ उड़े -
कड़ड़ड़ड़ड़ड़ाक
आऽऽऽह! यह तो दहकती बर्फ है! ऐसा तो असंभव है! बर्फ कभी गर्म नहीं हो सकती! यह गर्मी मेरी बर्फीली शक्ति छीन रही है!
मैं... अपने होश खो... रहा हूं!

ह्वीं ह्वीं ह्वीं! यह हरूओं की सृष्टि के नियम हैं, शीतनाग कुमार! हमारी सृष्टि में दहकती बर्फ भी हो सकती है! अब आगे देखता जा कि मैं क्या-क्या करता जा रहा हूं!
राजकुमार जी तो माधुरी दीक्षित... सॉरी लेने के ख्यालों में खो गए! अब हम क्या करें, सौडांगी दीदी? मैंने सुना है कि तुम थोड़े बहुत तंत्र-मंत्र जानती हो! इस सीन में भी थोड़े स्पेशल इफेक्ट डालो न!
मेरा तंत्र ज्ञान बहुत सीमित है नागू! मुझे पता नहीं कि वह इस प्राणी को कुछ नुकसान पहुंचा पाएगा भी या नहीं! फिर भी मैं कम से कम इसका ध्यान तब तक तो बंटा ही सकती हूं, जब तक नागराज अपनी शक्ति समेट-कर इससे लड़ने योग्य हो जाए!
अगले ही पल-
उईईई! यह क्या है दीदी! स्पेशल इफेक्ट की जगह हॉरर इफेक्ट डाल दिया!
तंत्र ऊर्जा! हुम! तू मेरे हरू प्राणी को भ्रमित कर रही है! अब तो 'सर्प-प्राणी' भी तेरी तंत्र ऊर्जा का जवाब हरू ऊर्जा से देगा!
घबराओ मत नागू! यह प्राणी तंत्र ऊर्जा से बना है! यह एक प्रकार का भ्रम जाल है! असली नहीं है!
और इसके वार भी इस सर्प प्राणी के शरीर पर नहीं बल्कि दिमाग पर असर डाल रहे हैं। यह सर्प प्राणी सचमुच में मार नहीं खा रहा। इसको सिर्फ ऐसा आभास हो रहा है कि यह पिट रहा है!

और 'ऊर्जा- आकृति' के संपर्क में आते ही तंत्र आकृति वैसे ही फट पड़ी जैसे पिन चुभाने पर हवा भरा गुब्बारा फट पड़ता है-

सौडांगी दीदी ! यह क्या हो गया ? हमारा हीरो तो पिट गया ! और अब लगता है कि हमारी बारी है ! कुछ करो ! जल्दी !

मैं तो जो कर सकती थी, वह मैंने कर दिया है ! मुझे क्या पता था कि इससे हमारी मुसीबत और बढ़ जाएगी !

ऊर्जा आकृति का पहला वार तो दोनों ने ही बचा लिया-

लेकिन सौडांगी दूसरा वार नहीं बचा पाई-

आऽऽऽह !

दीदी ! अरे, मेरी मणि कहां है ? याद आया ! उसे तो मैंने खुद ही त्याग दिया था और अब मेरे प्राण मुझे त्याग देंगे ! फिर नागराज को कौन बचाएगा अब मेरे सिवा दुनिया में उसका है ही कौन ! अरे मणि, कहां है तू ?

ऐ ऐ, भाई! तू... तू भी तो सांप ही लग रहा है! मैं... भी... मैं भी सांप हूं! इच्छाधारी सांप! तू बड़ा सांप है, और मैं छोटा सांप हूं! यानी तू मेरा बड़ा भाई, मैं तेरा छोटा भाई!... लड़ाई किस बात की?
अब सिर्फ मैं ही इसको उलझाए रख सकता हूं! लेकिन यह काम मुझे ज्यादा देर तक नहीं करना पड़ेगा! क्योंकि नागराज की शक्ति लगभग वापस आ चुकी है!
नागराज पल भर में सारा घटनाक्रम समझ गया-
ओह! इस प्राणी के शरीर से जो ऊर्जा प्राणी निकला है, वह इसके हाथों से किरणों द्वारा जुड़ा हुआ है! नागू को बचाने के लिए मुझे इन किरणों का सम्पर्क इसके शरीर से तोड़ना होगा! और सम्पर्क तोड़ने का सबसे सीधा रास्ता यही है...
खच खचाक
...कि मैं इसके हाथ ही काट दूं!
अब इसके शरीर के बाहर की ऊर्जा फिर से इसके शरीर की तरफ लपकेगी, और इसके हाथ भी जुड़ जाएंगे! लेकिन जब तक ऊर्जा वापस इसके शरीर में नहीं समाती, तब तक वह इतना कमजोर तो जरूर रहेगा।
...कि मेरी अति तीव्र विष फुंकार इसको बेहोश कर सके!
ओह! मेरी अति तीव्र विष फुंकार भी इसको सिर्फ आधा बेहोश कर पाई है! अब मैं क्या करूं?
कैसे रोकूं इस प्राणी को?
यह प्राणी एक मामूली सर्प है नागराज! इसके अंदर एक अजीब किस्म की ऊर्जा भरी है! जिसने इसको यह रूप दे दिया है! यह हमको इसका स्पर्श करने से पता चल गया है!

इस विषय में पूरी तरह जानने के लिए पढ़ें नागराज का विशेषांक फन

नागराज की सर्प सेना की ढकने की गति ऊर्जा के सर्प प्राणी के शरीर में वापस पहुंचने की गति से ज्यादा तेज थी। कुछ ही पलों के अंदर हजारों सर्पों ने सर्प-प्राणी के विशालकाय शरीर को पूरी तरह से ढक लिया था-

और सर्प प्राणी का शरीर पूरी तरह से ढकते ही सर्प-खोल सूक्ष्म रूप में आना शुरू हो गया और इस दबाव ने 'सर्प प्राणी' को भी सूक्ष्म करना शुरू कर दिया-

हरू के कुछ भी सोच पाने से पहले ही 'सर्प प्राणी' सूक्ष्म रूप में आकर बाकी सर्पों के साथ नागराज की कलाई में समा रहा था-

मेरी हरू शक्ति हार गई! देवताओं की एक मामूली सी सृष्टि से मात खा गई हरू शक्ति! मुझे क्रोध तो इतना अधिक आ रहा है कि मैं खुद इस मानव को नष्ट कर दूं। पर अब मैं ऐसा नहीं कर सकता! क्योंकि जब तक इसके अन्दर मेरी हरू शक्ति है, तब तक मैं इसे मार नहीं सकता। और हरू शक्ति को नष्ट करने वाला वार अगर मैं करूंगा तो खुद भी नष्ट हो जाऊंगा! क्योंकि उस वार से पृथ्वी पर मौजूद सारी हरू ऊर्जा नष्ट हो जाएगी। यह काम उतना आसान नहीं है, जितना नजर आ रहा था!

यह क्या हो गया? मैंने एक मामूली मानव में इतनी अधिक शक्ति होने की कल्पना भी नहीं की थी! इसने तो हरू प्राणी को ही अपने शरीर में समेट लिया!...

पदार्थ देवों की सृष्टि का ही होगा, लेकिन उसको रूप हरू शक्ति देगी! उसमें जान भी हरू शक्ति डालेगी! पदार्थ होगा यह रेत, और उससे बनेगा... मरेत! जा मरेत, तुझे न तो कोई अपने अंदर समेट सकता है, और न ही नष्ट कर सकता है! पर तू सब-कुछ नष्ट कर सकता है! जा, जाकर मेरी हार को जीत में बदल दे! जा!

लेकिन मैं तुझे उस दिशा में नहीं भेजूंगा, जहां पर मेरा 'सर्प प्राणी' अभी-अभी परास्त हुआ है! क्योंकि एक तो वहां के मानव अब थोड़े सतर्क हो गए होंगे, और दूसरे वहां पर मौजूद नागराज नामक मानव के अंदर भरी हुई शक्ति तुझे नुकसान भी पहुंचा सकती है! इसलिए विपरीत दिशा में जा, और सब-कुछ मटियामेट कर दे! कोहराम मचा दे!

धड़ाम

गुस्सा मत कर बहन! ले, मैं पीछे से नहीं, सामने से टोक लगा देता हूं! अब बता, दुनिया कब खत्म हो रही है? पुच्छल तारे के सामने या इसके जाने के बाद?
दुनिया खत्म जरूर हो रही है लेकिन पुच्छल तारे के कारण नहीं, पुच्छल तारे को ताकने वालों के कारण! इस ग्रह को इंसान खत्म कर रहा है, हर तरफ प्रदूषण फैलाकर! और इस प्रदूषण का एक बहुत इंपोर्टेंट सोर्स है...
Say NO TO PLASTIC

...प्लास्टिक! और उससे बनने वाली बेहिसाब थैलियां! दुनिया भर में प्लास्टिक का जो कूड़ा इकट्ठा हो रहा है, उससे पर्यावरण को गंभीर खतरा है!
प्लास्टिक, बायो-डीग्रेडेबल नहीं होता है! यानी...
प्लास्टिक पर्यावरण का हत्यारा है।
LEAVE WORLD TO YOUR CHILDREN NOT PLA

...प्लास्टिक, कागज की तरह अपने आप नष्ट नहीं होता! इधर-उधर फेंके गए प्लास्टिक के पैकेट और टुकड़े सीवरों में, नालियों में जाकर सारा सिस्टम जाम कर देते हैं! गाय और कुत्ते जैसे सड़क के जानवर इनमें पड़े खाने के साथ इनको भी खा जाते हैं, और गले में पैकेट फंस जाने के कारण मर जाते हैं! प्लास्टिक का बढ़ता कूड़ा पूरी दुनिया के लिए एक भयंकर खतरा है! इसीलिए आज हम बच्चों के साथ एक विशाल रैली निकालने जा रहे हैं, जिसका थीम है... से नो टू प्लास्टिक!
तड़.तड़.तड़.तड़.
प्लास्टिक से तौबा कर ली!
वाह, वाह, वाह! भाषण तो बड़ा ही जोरदार और इंप्रेसिव है!

लेकिन तुझे अपनी रैली निकालने के लिए यही दिन और समय मिला था! आज तेरी बात कौन सुनेगा? सब तो 'मिलेनियम कॉमेट' देखने में बिज़ी हैं!
Say NO TO PLASTIC
LEAVE WORLD TO YOUR CHILDREN NOT PLASTIC
यही तो! आज पूरा राजनगर या तो घरों से बाहर घूम रहा है, या अपनी खिड़की, छतों से झांक रहा है! आज तो मेरी बात सब सुनेंगे ही सुनेंगे!

राजनगर का सुपर हीरो! ओ हो हो हो! समझा! तू बाद में मैसेज भेजकर मुझे बुलाती, और मुझे सरप्राइज देती! बता, बता मुझे कहां पर और कितने बजे पहुंचना है! मैं पहुंच जाऊंगा!

भइयाऽऽऽ फिरतो तुम्हारे लिए सरप्राइज नहीं, शॉक है! क्योंकि हमने राजनगर के सुपर हीरो सुपर कॉप इंस्पेक्टर स्टील को बुलाया है तुमको नहीं, भई, तुम तो बिजी सुपर हीरो हो न! पता नहीं आ पाते या नहीं!

भइया शायद थोड़ा झेंप गया है! मैं इसीलिए चुपचाप निकल जाना चाहती थी। वैसे तो मैं भइया को ही रैली में साथ ले जाती, लेकिन हमारी रैली के अन्त में इंस्पेक्टर स्टील अपनी मेगागन द्वारा प्लास्टिक की थैलियों के ढेर में आग लगाएगा, ताकि प्लास्टिक के विध्वंस की शुरुआत का इफैक्ट दिया जा सके! और यह काम भइया नहीं कर सकता है! खैर, देखें कि इंस्पेक्टर स्टील भी आ पाते हैं या नहीं!

जो भी हमारी अपील पर गौर करके हमारे और पृथ्वी के भविष्य को प्लास्टिक से बचाना चाहता है, वह अपने घर की सारी प्लास्टिक थैलियां हमको दे दे! ताकि हम बच्चे उसको एक खास तौर से बनाए गए प्लास्टिक थैली हवन कुंड में डालकर नष्ट कर दें! और जो अन्य बच्चे इस अभियान में हमारे साथ आना चाहें, उनका हम स्वागत करते हैं! प्लास्टिक नष्ट करो! प्लास्टिक नष्ट करो!
प्लास्टिक
श्वेता की अपील का तगड़ा असर हो रहा था! घर-घर से लोग प्लास्टिक की थैलियां बाहर निकालकर रैली में शामिल बच्चों के हवाले कर रहे थे-
ले बेटे! तू भी घर की सारी प्लास्टिक थैलियां ले जा, और इनको नष्ट कर दे! आज से हम इन थैलियों का इस्तेमाल नहीं करेंगे!
जल्दी ही रैली अपने गंतव्य पर पहुंच गई-
ये है हमारा स्पेशल हवन कुंड! सारी थैलियां इसी में डाल दीजिए! इस गड्ढे के भरते ही इंस्पेक्टर स्टील अपनी लेगगन के एक ही ब्लास्ट से इसका नाश कर देंगे!
ये भाषण जरा धीरे बोल श्वेता!
इंस्पेक्टर स्टील को तो रैली में हमारे साथ शामिल होना था! वह तो हुआ नहीं!
अब वह यहां पर भी आएगा, इसकी क्या गारंटी है?

डरा मत गुल्लू! अभी भइया को नाराज करके आई हूं! और अगर इंस्पेक्टर स्टील साहब भी चकमा दे गए तो ये सारी प्लास्टिक थैलियां, गड्ढे से बाहर निकाल कर वापस बांटनी पड़ जाएंगी!
ऐसा नहीं होगा श्वेता...
इंस्पेक्टर स्टील को लोग फर्ज की मशीन कहते हैं। और समाज तथा पर्यावरण के प्रति भी मेरा कुछ फर्ज है! अपने फर्ज को मैं धोखा कभी नहीं दे सकता! वह तो कुछ आतंकवादियों को पकड़ने में मुझे समय लग गया, वर्ना मैं और जल्दी आकर एंटी प्लास्टिक रैली में भी जरूर शामिल होता!
वर्ना कहीं फिर से आपको कोई और फर्ज आपको याद करने लगा तो हमारी रैली टांय-टांय फिस्स हो जाएगी!
रिलैक्स श्वेता! ये रैली फ्लॉप नहीं होगी!
हुर्रे! इंस्पेक्टर स्टील आ गया!
स्टील सुपर कॉप है, हमारा हीरो टॉप है!
थैंक गॉड! थैंक गॉड! अब जल्दी से अपनी मेगा-गन चलाइए!
पीछे हट जा! इंस्पेक्टर स्टील मेगागन चलाने जा रहा है!
इंस्पेक्टर स्टील ने अपनी मेगागन प्लास्टिक थैलियों से भरे गड्ढे की तरफ तानी—
लेकिन चला नहीं पाया—
बचाओ!
यह क्या मुसीबत आ गई है?
उधर से चिल्लाने की आवाजें कैसी आ रही हैं? लगता है कुछ गड़बड़ है! मैं अभी अपने टेलिस्कोपिक विजन से देखता हूं कि क्या गड़बड़ हो रही है?
ये मेरी किस्मत की गड़बड़ है! भइया की बद्दुआ लग रही होगी मुझको!

श्वेता आने वाली मुसीबत को एक मामूली सा विलेन समझ रही थी! लेकिन इस शक्ति से टकराने के लिए सिर्फ हिम्मत ही काफी नहीं थी–

सरेत, पूरी सृष्टि को बना डालेगा रेत!

धड़ाम

रेतीले पत्थर की भुजा का एक वार, रेत बन चुकी इमारत सामग्री को धूल में मिला दे रहा था–

लेकिन ये तबाही ज्यादा देर तक नहीं चली –

राजनगर को बचाने वाले हाथ काफी सशक्त थे –

बस! रुक जा, और अपने आपको कानून के हवाले कर दे! वर्ना इंस्पेक्टर स्टील तेरा वही हाल करेगा, जैसा तू राजनगर की धरती पर कर रहा है!

तड़ाक
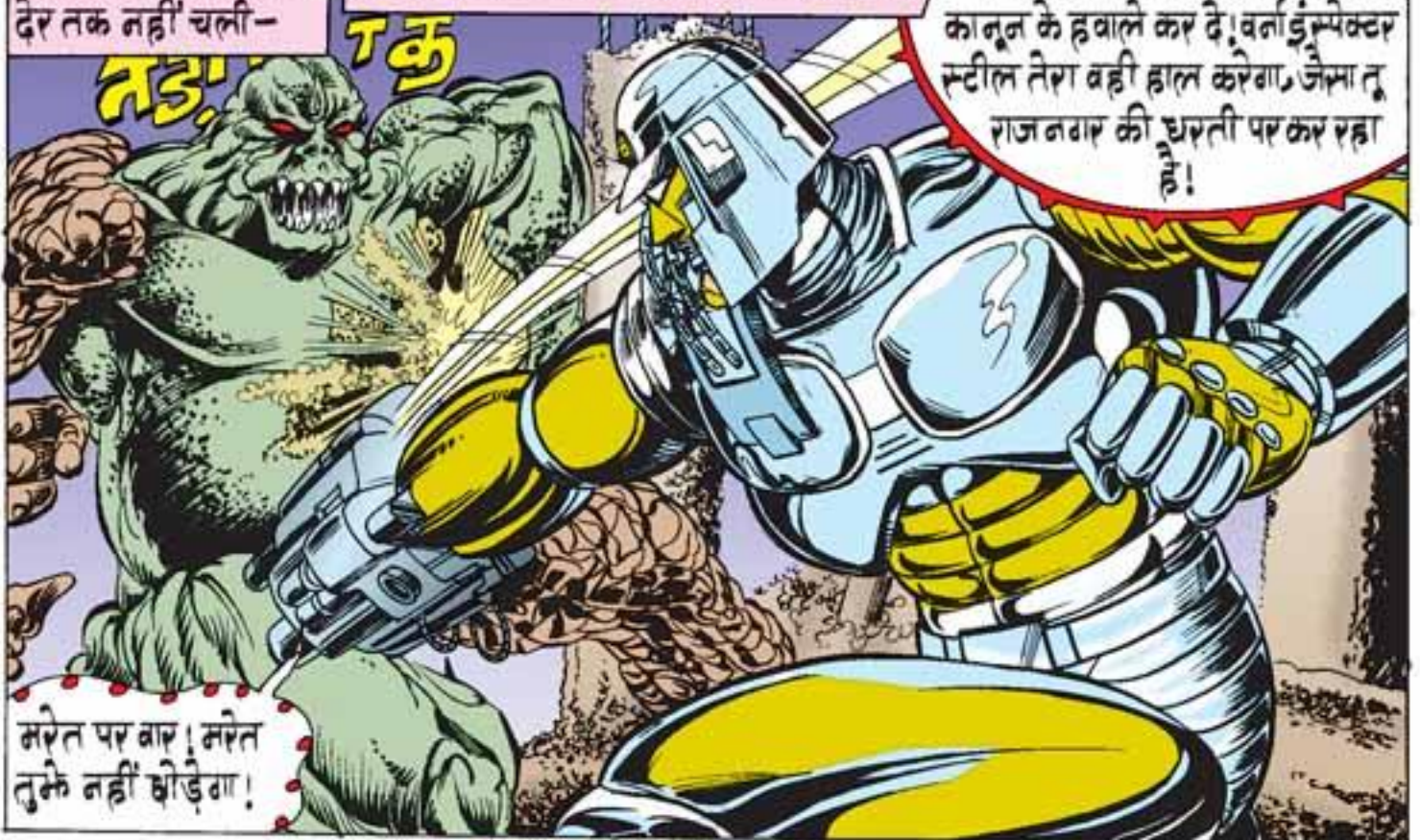
मरेत पर वार! मरेत तुझे नहीं छोड़ेगा!

छोड़ मरेत का रास्ता! वर्ना दफना देगा तुझे मरेत इस रेत में!

स्टील के वार ने तो सिर्फ हल्की सी रेत उड़ाई थी! लेकिन मरेत के वार ने स्टील को ही हवा में उछाल दिया –

आऽऽऽह! इसका सारा शरीर तो रेत का बना हुआ लग रहा है! लेकिन रेत के शरीर में जान कैसे हो सकती है! और ऐसी अमानवीय शक्ति से तो मेरा पाला पहले कभी नहीं पड़ा! मेरे शरीर के पेंच ढीले हो गए लगते हैं!
वैसे इस 'मरेत' का रूप इंसानी जरूर है, लेकिन इसका रेतीला शरीर इंसानी नहीं हो सकता! मेरी 'स्कैनिंग' भी यही कह रही है!
यानी मैं इस पर ऐसा घातक वार भी कर सकता हूं, जो इसको नष्ट कर दे!
मेगावान का 'रॉकेट लांचिंग मोड' ऑन हुआ, और उसकी गरज ने वातावरण के साथ-साथ-
बड़ड़ड़ड़म
मरेत के शरीर को भी कंपा डाला-
मरेत के पेट में एक बड़ा छेद बनाता हुआ रॉकेट, मरेत के रेतीले शरीर के आर-पार हो गया-
लेकिन इससे ज्यादा और कुछ नहीं हुआ-
क्योंकि रेतीले शरीर में बना वह छेद रेत से अपने आप बंद भी हो रहा था-
स्टील को आश्चर्यचकित होने का मौका तक नहीं मिल पाया-
अरे! इसका हाथ तो...

...लंबा होकर मुझे अपने शिकंजे में ले रहा है!...ये अपने शरीर से रेत पैदा करके, अपने अंगों को मनचाहा आकार दे सकता है!
इंस्पेक्टर स्टील की मशीनी शक्ति भी उसे इस रेतीले शिकंजे से छुड़ा न सकी—
और उसके बाद उसके इंसानी दिमाग को रात में तारे के साथ-साथ कई सूर्य भी नजर आने लगे-
आऽऽह! कैसी भीषण ताकत है इसमें, जो मेरे टनों वजनी शरीर को उठा-उठाकर ऐसे पटक रही है, जैसे मैं कोई खिलौना हूं!
इन वारों से मेरे स्टील के शरीर को तो शायद नुकसान न पहुंचे, लेकिन मेरे अन्दर लगे नाजुक कंप्यूटर पुर्जे और सर्किट जरूर खराब हो सकते हैं! मुझे इस शिकंजे से आजाद होना ही होगा!
और इसका सबसे आसान तरीका यह है कि इस शिकंजे की जड़ को ही काट दिया जाए!
मेगागन के ब्लास्ट ने उस हाथ को ही मरेत के कंधे से अलग कर दिया-
और स्टील आजाद हो गया—

हवीं! देवताओं ने इस बार कुछ ज्यादा ही अजीब सी सृष्टि रची है! पहले अपने शरीर से लावा उगलने वाला मानव, और अब ये धातुई मानव! जो आंशिक रूप से मानव है, और आंशिक रूप से यंत्र! खैर ये मरेत का तो कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा! देखता हूं कि ये मरेत के सामने कितनी देर तक टिकता है!
अब मैं मरेत से जो चाल चलवाऊंगा, उसके सामने ये धातुई मानव टिक नहीं पाएगा! तड़प-तड़प कर मरेगा!
अगले ही पल मरेत का टूटा हाथ बालू कणों में बदलकर फिर से मरेत के कंधों से आ जुड़ा–
कमाल है! इसको तोड़ने का मतलब अपनी एनर्जी बर्बाद करना है! कैसे भी तोड़ो, ये जुड़ जाता है!
अब मरेत तुझे तोड़ेगा, और तू जुड़ नहीं पाएगा!
स्टील के संभलने से पहले ही रेत के कई गोले उसके मशीनी शरीर से आ टकराए, और–
मरेत!
ओह! ये रेत तो मेरे जोड़ों के अन्दर घुसती जा रही है, और उनको जाम करती जा रही है! मैं अपने हाथ-पैर नहीं हिला पा रहा हूं!
अब तुझे हिलने की जरूरत नहीं पड़ेगी! क्योंकि हिलते रहने से तू जल्दी मरेगा! मैं जमीन की रेत को दलदल में बदल रहा हूं! और इसमें तू जितना तड़पेगा, उतनी ही जल्दी धंसेगा!
आऽऽऽह! यह सही कह रहा है! रेत ने मेरे कंप्यूटर उपकरणों को भी जाम कर दिया है!
मैं अपने हैलीकॉप्टर की मदद के लिए नहीं बुला पा रहा हूं!
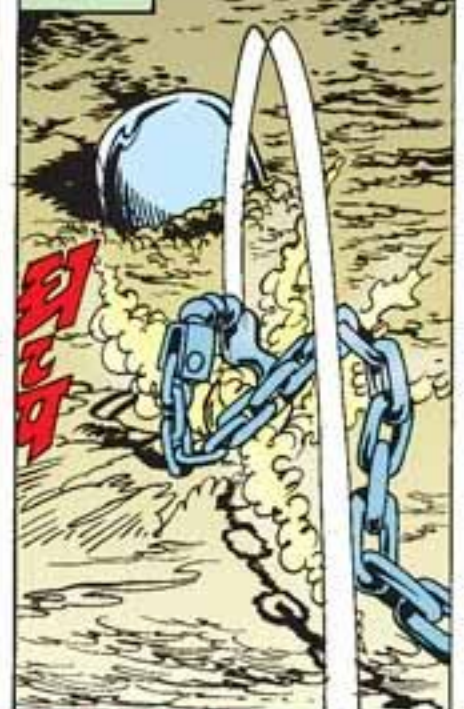
चंडिका! तुम?

तुम मुझको जानते हो इंस्पेक्टर स्टील?

DESERT RECOVERY

पहले मिला तो कभी नहीं चंडिका! लेकिन पुलिस डिपार्टमेंट में तुम्हारा जिक्र होता रहता है।

और न्यूज पेपरों में तुम्हारी फोटो भी एक दो बार देखी है।

मैं तो यहां पर जल्दी आ जाती इंस्पेक्टर स्टील, लेकिन मरेत की सड़क को रेतीला दलदल बना देने की शक्ति देखकर ये डेजर्ट रिकवरी वैन लाने वापस चली गई थी! इसके चौड़े और बड़े पहिए रेतीले दलदल में नहीं धंसते। किस्मत की बात थी कि यह मुझे पास के ही एक गैराज में मिल गई! खैर, अब ये बताओ कि इस मरेत से निबटना कैसे है?
यह मेरी समझ से बाहर की बात है, चंडिका! वैसे भी मेरे जोड़ अभी जाम हैं!
मेरे अन्दर लगे 'लुब्रिकेटिंग ऑयल' मेरे जोड़ों में फिर से ग्रीस भरकर उन्हें ठीक तो कर देंगे, लेकिन इस प्रक्रिया में थोड़ा समय लगेगा! और तब तक मैं हिल भी नहीं पाऊंगा!
मेगागन चलाने तक के लिए हाथ नहीं उठा पाऊंगा!
हम इसे नष्ट चाहे न कर सकें, पर कोई आइडिया दिमाग में आने तक इसे रोक तो सकते ही हैं! और इसको तोड़ने में तुम मेरी बहुत मदद कर सकते हो! अपने शरीर का इस्तेमाल उस लोहे के गोले की तरह करके, जिससे बड़ी-बड़ी मजबूत इमारतें भी ढह जाती हैं... बस वह लोहे का गोला तुम होगे, जिसे चलाऊंगी मैं!
मैं तैयार हूं चंडिका!
और अगले पल जो हुआ, मरेत को उसकी उम्मीद नहीं थी-
धड़ाक्क!
स्टील का टनों वजनी शरीर उसके रेतीले जिस्म से तेज गति से आ टकराया-
और उसके शरीर के रेतीले जोड़ धसकने लगे-

कड़ाक
चंडिका के सटीक 'इंस्पेक्टर स्टील' वार मरेत की जुड़ने से पहले ही तोड़ते जा रहे थे–
कुछ ही देर में मरेत के सारे शारीरिक अंग अलग-अलग हो चुके थे–
ये मानव क्या समझते हैं कि इन्होंने मरेत को बेबस कर दिया ? नहीं !
मरेत मारेगा, रेत से !

इंस्पेक्टर स्टील जानता था कि मरेत को तोड़ने से कोई फायदा होने वाला नहीं है-
अब मेरे जोड़ खुल गए हैं चंडिका! मैं हरकत कर सकता हूं! लेकिन यह मरेत फिर से जुड़ जाएगा! इसको तोड़ने की कोशिश करना अपनी एनर्जी बर्बाद करना है!
यही तो हमको करते रहना है स्टील! क्योंकि ऐसे यह अपने आप को जोड़ने की कोशिश ही करता रह जाएगा, और अपने रेतीले वार नहीं कर पाएगा! तब तक हम कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेंगे!
मरेत को पार करके सिर्फ एक ही रास्ता जाता है! मौत का रास्ता!
आऽऽऽह! यह तो अपने टूटे सिर से रेत की आंधी उगल रहा है! मेरी आड़ में हो जाओ चंडिका!
हफ्फऊऊऊ
लेकिन आड़ में होने का कोई फायदा नहीं होने वाला था! क्योंकि मरेत के मुंह से निकलती बेशुमार रेत पूरे इलाके को रेत से ढकती जा रही थी-
और जब राजनगर पर इतनी भीषण मुसीबत आ पड़ी हो-
तब राजनगर का रक्षक भला इससे अनजान कैसे रह सकता था-
क्या? रेत की आंधी! और वह भी राजनगर के सिर्फ एक भाग में!
हां, कैप्टेन! देखो, हमारे पास अभी-अभी कुछ सेटेलाइट फोटोग्राफ्स आए हैं!

ध्रुव का 'आइडिया' अमल' में आ पाने से पहले ही–

यह क्या हो रहा है, चंडिका? एकाएक साफ आसमान से ये बिन बादल बरसात कैसे होने लगी? और बरसात भी इतनी मूसलाधार है कि जमीन पर पड़ी रेत की मोटी पर्त तक बहती जा रही है!
ये है तो एक करिश्मा इंस्पेक्टर स्टील! और ऐसे करिश्मे को सिर्फ एक ही शख्स अंजाम दे सकता है!
सुपर कमांडो ध्रुव!
यस, मेरा ख्याल एकदम सही है! पर ये मूसलाधार बारिश तुमलाए कैसे ध्रुव?
राजनगर फिल्म सिटी तक जाकर, उनका कृत्रिम बारिश के सीन फिल्माने वाले पाइपों का जाल लाकर! इसमें फायर ब्रिगेड के 'हाई पंपों' द्वारा प्रेशर से पानी छोड़े जाने पर मूसलाधार बारिश शुरू हो गई, और हवा में उड़ते रेत के कण पानी की बूंदों में जज्ब होकर बैठते चले गए!
यार, कभी-कभी मुझे शक होता है कि कंप्यूटर चिप मेरे बजाय तुम्हारे दिमाग में तो नहीं लगी है!

अब इतनी सारी रेत, राजनगर के इस क्षेत्र का सीवर सिस्टम, कुछ समय के लिए जाम जरूर कर देगी, लेकिन रेत में दबकर मरने से तो बेहतर है कि दो-तीन दिनों के लिए सीवर की समस्या को झेल लिया जाए!
मरेत मारेगा रेत से! मरेत की योजना में रुकावट डालने वाला जिन्दा नहीं बचेगा! नहीं बचेगा!
मरेत की रेतीली पूंछ लंबी होती चली गई, और 'स्टार कॉप्टर' को एक जोरदार झटका लगा-
आऽऽऽह! बड़ा जोरदार वार था! मेरा सिर घूम रहा है! पर मुझे अपने होश संभालने होंगे! वर्ना इतनी ऊंचाई से पाइपों या जमीन से टकराने पर मेरा शरीर भी रेत जितने छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट जाएगा! स्टार लाइन को पाइप सिस्टम में फंसाने की कोशिश करता हूं! अरे! ब्रेसलेट काम नहीं कर रहा! शायद इसके अन्दर भी रेत के कण चले जाने से इसका मैकेनिज्म जाम हो गया है! अब क्या करूं? पाइप पकड़ने की कोशिश करूं?
ध्रुव अपना संतुलन खोकर स्टार कॉप्टर से अलग जा गिरा! और उसी पल रेतीली पूंछ के दूसरे वार ने उसको हवा में और ऊपर तक उछाल दिया-
तड़ाक
ओह! इसकी दुम फिर से मुझे टक्कर देने के लिए मेरी तरफ आ रही है!

★ इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: सुपर कमांडो ध्रुव का कॉमिक प्रतिशोध की ज्वाला

एंटी प्लास्टिक रैली! वही रैली जो श्वेता ने आर्गेनाइज की थी? और जिसमें हजारों प्लास्टिक की थैलियों को एक हवन कुंड में डालकर नष्ट करने की योजना थी!
वह कुंड यहीं-कहीं आसपास है क्या?
हां, ध्रुव! यहां से मुश्किल से पचास गज दूरी पर है!
लेकिन थैलियां नष्ट कर पाने से पहले ही ये दूसरा नष्टक 'मरेत' आ धमका!
तब तो काम बन गया। इंस्पेक्टर स्टील! चंडिका, तुम भी हमारे साथ इस 'मरेत' को उस कुंड की तरफ धकेलना शुरू कर दो!
लेकिन इससे होगा क्या ध्रुव?
समझाने का वक्त नहीं है चंडिका! कुछ देर में तुम अपने आप ही समझ जाओगी!
हुँ! योजनाएं उलझती जा रही हैं! अब ये तीसरा मानव आ धमका है! ध्यान देने योग्य बात यह कि ये तीनों सामान्य मानवों से कुछ अलग प्रकार की पोशाकें पहने हुए हैं! और ये तीनों ही मरेत से जूझने का साहस कर पा रहे हैं! ये या तो किसी किस्म के प्रहरी हैं! और या रक्षक!
पता करना पड़ेगा कि मानवों की इस साहसिक प्रजाति को क्या कहते हैं!
और इसी दौरान-महानगर में-
अच्छा! तो तुमने उस सर्प प्राणी को अपने शरीर के अंदर ही कैद कर रखा है, नागराज!
हां, भारती! जब तक वह मेरे शरीर में रहेगा, तब तक मेरी इच्छा और मेरे सूक्ष्म सर्प उस पर हावी रहेंगे, और वह सामान्य रूप में नहीं आ पाएगा!
पर वह प्राणी आखिर आया कहां से था? उसका मकसद क्या था?
यह तो मुझे पता नहीं...

नागराज! यह क्या?
क्या हुआ, दादाजी! आप मुझको ऐसे क्यों देख रहे हैं?
तुम्हारे... तुम्हारे चारों तरफ एक दिव्य सी ऊर्जा का क्षेत्र चमक रहा है! ऐसा तो मैंने पहले कभी नहीं देखा!
यह जरूर उसी 'सर्प प्राणी' की ऊर्जा है, जिसको मैंने अपने शरीर में समा लिया है! मेरे सर्प उस प्राणी को तो निष्क्रिय किए हुए हैं, लेकिन ऊर्जा को रोक नहीं पा रहे!
ओह, समझा!
लेकिन इससे मुझे तो कोई नुकसान होता महसूस नहीं हो...
...आऽऽऽह!
क्या हुआ नागराज? तुम ठीक तो हो न?
मेरे दिमाग में अजीब सी आकृतियां उमड़ रही हैं! राजनगर में कुछ गड़बड़ हो रही है! मैं एक विचित्र रेत के प्राणी की आकृति देख रहा हूं! और साथ में ध्रुव, इंस्पेक्टर स्टील और चंडिका भी है! उस रेतीले प्राणी में मुझे वैसी ही ऊर्जा का आभास हो रहा है, जैसी सर्प प्राणी के अन्दर थी! मुझे उनकी मदद को जाना होगा! जाना होगा!
नागराज के मस्तिष्क में यह विचार कौंधते ही नागराज का शरीर अपने आप हवा में घुलने लगा-
यह क्या नागराज? तुम अपनी इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग क्यों कर रहे हो?
मैं कुछ भी नहीं कर रहा भारती! मेरा शरीर अपने-आप गायब...
...हो रहा हैऽऽऽ
नागराज!

राजनगर में-
मरेत की प्लास्टिक थैलियों के हवन कुंड की तरफ धकेलने में इंस्पेक्टर स्टील के भारी भरकम वार ही सबसे कामयाब हो रहे थे-
बस, स्टील! अब ये प्लास्टिक थैलियों से भरे हवन कुंड में पहुंच गया है! और बारिश भी बन्द हो गई है! शायद फायर पंपों का पानी खत्म हो गया है!
अब इसके हवन कुंड में गिरते ही...
...तुम वही काम करो, जिसके लिए तुम यहां आए थे! अपनी मेगागन से इस कुंड में आग लगा दो! जल्दी!
बिना कुछ और पूछे स्टील की मेगागन गरज उठी-
और प्लास्टिक की बेशुमार थैलियां, दहकती आग में गल-गलकर मरेत के शरीर से लिपटने लगी-
अब यह प्लास्टिक गल-गलकर मरेत के रेतीली कणों में ऐसे घुसता जाएगा, जैसे की दीवार की दरार में बारिश का पानी घुस जाता है, और अब, जब हम इसे तोड़ेंगे तो रेत के कणों के ऊपर प्लास्टिक की पर्तें चिपकी होने के कारण रेत के कण आपस में दुबारा जुड़ नहीं पाएंगे!
अगर ऐसा है...

ओफ! रेत में ऊर्जा तो अभी भी मौजूद है, लेकिन उसके ऊपर एक आवरण चिपक जाने के कारण रेत अपना प्राकृतिक स्वभाव खो बैठी है, और इसी कारण उसके कण आपस में जुड़ नहीं पा रहे हैं! पर... पर... यह क्या? यह तो नागराज है! पर नागराज यहां पर कैसे आ गया?

नागराज! तुम यहां पर कैसे आ गए? और वह भी इच्छाधारी कणों में बदलकर! यह कोई तुम्हारी नई शक्ति है क्या?

जवाब में नागराज सर्प प्राणी से मुठभेड़ की अपनी सारी कहानी सुनाता चला गया-

और फिर मैं यहां आ गया! मुझे खुद समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसा कैसे हो गया!

ऐसा जरूर सर्प-प्राणी और मरेत में एक ही ऊर्जा होने के कारण हुआ होगा नागराज! अब वही ऊर्जा तुम्हारे अंदर भी है! इसलिए तुम्हारे मस्तिष्क का संबंध मरेत के अंदर की ऊर्जा से भी जुड़ गया, और उसी ऊर्जा ने तुम्हारे शरीर कणों को यहां टेलीपोर्ट कर दिया! इसका एक ही अर्थ है, और वह ये कि सर्प प्राणी और मरेत एक ही स्थान से आए हैं! कोई गहरा षडयंत्र है इसके पीछे!

पर अब नागराज में हरू शक्ति बढ़ गई है, और उससे वह हरू शक्ति छीनी भी नहीं जा सकती! अगर वह हरू शक्ति इसके शरीर में होती तो उसे छीनना आसान था, पर वह शक्ति 'सर्प प्राणी' के शरीर में है! सर्प प्राणी के शरीर को नागराज के शरीर से अलग किए बगैर हरू शक्ति खींचना संभव नहीं है! और सर्प प्राणी को इसके शरीर से बाहर निकालने का तरीका मुझे नहीं मालूम!

खैर, इतनी देर में मुझे यह तो पता चल गया है कि ऐसी विचित्र पोशाक पहनने वालों को सुपर हीरो कहा जाता है! और अब तक मेरे दोनों कामों में अड़ंगा 'सुपर हीरोज' ने ही डाला है!

इसलिए सफलता के लिए आवश्यक है कि इन 'सुपर-हीरोज' को रास्ते से पहले हटाया जाए! और इस काम की शुरुआत करने के लिए मुझे पहले ऐसे दूसरे सुपर हीरोज को ढूंढना होगा!

ये रहे इस क्षेत्र के सुपर हीरोज! अब सबसे पहले इनको एक-एक करके समाप्त करना होगा! और फिर मचेगा कोहराम!

मुंबई कभी नहीं सोती, और न ही सोता है उसका अंडर-वर्ल्ड-

कई हफ्तों की मेहनत के बाद, आखिरकार मुझे उस रहस्यमय 'डेटोनेटो' के गुप्त ठिकाने का पता चल ही गया, जिसके द्वारा बनाए गए बम, हमारे देश के कई इलाकों में फटकर जान माल का भारी नुकसान कर चुके हैं!

शाबाश, दोस्तो! तुम लोगों की जासूसी पर लगाना बेकार नहीं गया!

खबर है कि इसने मानव बम बनाने में किसी नई तकनीक की खोज निकाला है! और उस तकनीक से बने 'मानव बमों' को न तो ढूंढा जा सकता है, और नहीं पकड़ा जा सकता है!

आखिर क्या हो सकती है ऐसी तकनीक?

तकनीक सचमुच क्रांतिकारी थी-

वाह, डेटोनेटो! आइंस्टीन के बाद एक तू ही पैदा हुआ है! क्या कमाल का काम सोचा है तूने! 'डेड बम' यानी मृत शरीर का बम! दुनिया के सबसे खतरनाक विस्फोटकों में से एक है, नाइट्रोग्लिसरीन! और नाइट्रोजन तथा ग्लिसरीन ये दोनों ही तत्व मानव शरीर में मौजूद रहते हैं! मरने के बाद जब शरीर सड़ने लगता है तो ये तत्व भी आपस में मिलने लगते हैं! और मेरे कुछ और रसायनों के मिलाने के बाद ये मुर्दा बन गया है एक खतरनाक बम! अब इसे चलाना तुम्हारा काम है अघोरनाथ!

और मुर्दा जी उठा-

आऽऽऽहा! वाह अघोरनाथ! तू इस दुनिया का नंबर दो बन गया है! नंबर वन तो भगवान है ही! अब जा, मेरे 'डेड बम' और ढूंढ ऐसी भीड़ भरी जगह को, जहां पर तू फटे, तो तेरे जैसे मरों की तादाद में भारी बढ़ोत्तरी हो जाए!

नहीं! ऐसा कभी नहीं होगा! डोगा तेरी मौत की दुकान को हमेशा के लिए बंद कर देगा! अभी और यहीं!

धमक

याद कर डेटोनेटी! बरसों पहले जब एक बम तेरे चेहरे पर फटा था, तो तेरे चेहरे का ये हाल हो गया था!

अब जब डोगा के क्रोध का बम तुझ पर फटेगा तो तेरा क्या हाल होगा!

च्यूंम

च्यूंम

अघोरनाथ! रोक इसे! वर्ना कल को कोई हमारे शरीरों का 'डेड बम' बना रहा होगा!

वैसे तो 'मृत विस्फोटक' यानी 'डेड बम' इसको आराम से रोक सकता है! पर उसको तुमने पहले ही यहां से जाने का आदेश दे दिया है! इसलिए यह लड़ाई हमको ही लड़नी होगी!

और यह लड़ाई लड़ेंगी, वे अतृप्त आत्माएं, जो शरीर न मिलने के कारण पहले से ही क्रोधित हैं!
ऊंह ट्टीत क्लीम हर्रररत! आत्मानम् आह्वानम् करोति!

और अगले ही पल डोगा पर अनेक अदृश्य आकृतियां टूट पड़ीं—
आऽऽऽह! यह एकाएक क्या हो रहा है! मुझे अपने ऊपर दबाव सा पड़ता महसूस हो रहा है! जैसे मुझे कोई दबा रहा हो! मेरा...मेरा शरीर मेरे हाथ-पैर मेरी इच्छा के अनुसार काम नहीं कर रहे!

मेरे... मेरे हाथ, मेरी गन को मेरी ही तरफ मोड़ रहे हैं! मैं इनको रोक नहीं पा रहा हूं!
डोगा की अपनी गन, उसकी ही तरफ घूमने लगी—

और ट्रिगर दबने लगा—

जिसने भी इन प्राणियों की रचना की है, उसके अन्दर भी वही ऊर्जा भरी होगी, जो इन प्राणियों के अन्दर थी, और वही ऊर्जा अब तुम्हारे अन्दर भी है! अगर तुम महानगर से, इस ऊर्जा का आभास पाकर राजनगर तक आ सकते हो तो इसी ऊर्जा के आभास के जरिए उस तक भी पहुंच सकते हो, जिसने इन प्राणियों को पैदा किया है!

तुम सही कह रहे हो ध्रुव! मैं कोशिश करता हूं!

नागराज ने ध्यान लगाया–

और दूर रेगिस्तान में मौजूद 'हरू' चौंक उठा–

अरे! यह क्या? कोई हरू शक्ति मुझे ढूंढने की चेष्टा कर रही है! यह शक्ति अवश्य उस मानव नागराज की ही होगी! ओफ्! सारे वार उल्टे पड़ रहे हैं! अब सुपर हीरोज मुझे ढूंढने के लिए यहां पर अवश्य आएंगे! और मेरे पास पूर्ण जानकारी न होने के कारण मैं अभी उनसे सीधा टकराव नहीं चाहता! अब मैं यहां पर रुक नहीं सकता! कोई नया स्थान ढूंढना होगा! वैसे भी यहां पर रुकने का कोई फायदा भी नहीं है!

हरू के रूप में घिरा, फोटोग्राफर रमेश का शरीर ऊर्जा में बदलकर गायब होने लगा–

और ध्यान लगाए नागराज को एक झटका लगा–

अरे! अभी-अभी तो मेरा किसी 'ऊर्जा-धारक' से संपर्क हुआ था! पर संपर्क होते ही, संपर्क टूट भी गया!

कहां पर नागराज? वह शक्ति कहां पर थी?

राजनगर और महानगर के बीच के रेगिस्तान में!

'डोगा' को 'नो डोगा' बनाने के लिए ट्रिगर को सिर्फ आधी दूरी और तय करनी थी–
ओफ्‌! उम्मम्फ! मुझ पर कोई अमानवीय दबाव पड़ रहा है! अघोरनाथ, बलफ नहीं मार रहा था! इतना असहनीय अदृश्य दबाव आत्माओं का ही हो सकता है! और इनसे मैं कैसे जीतूंगा? जितनी ताकत लगाकर मैं नाल को अपनी तरफ से दूर कर रहा हूं! ये दुगुनी ताकत से नाल को फिर मेरी तरफ खींच दे रहे हैं!
एक ही रास्ता है! मैं ताकत लगाना बंद करके अपने शरीर को एकदम ढीला छोड़ दूं! और मेरे ऐसा करते ही...
...एक झटके से बंदूक उसी तरफ घूम जाएगी, जिस तरफ आत्माओं का दबाव पड़ रहा है!
आहा! अब मैं इसी के गन की गोलियां इसी के सीने में उतार दूंगा अघोर नाथ! फिर हम इसका भी 'डेड बम' बनाएंगे!
इतनी मेहनत की जरूरत नहीं है डेटोनेटो! बंदूक वहीं गिरी रहने दे! अतृप्त आत्माएं तेरा ये काम बगैर बारूद की बदबू फैलाए ही कर देंगी!
डोगा द्वारा हाथों को ढीला छोड़ते ही गन भी छिटककर दूर जा गिरी–
आत्माओं ने डोगा को दबोच लिया था–
आऽऽह! मेरी हड्डियां कड़कड़ा रही हैं! मेरा दम भी घुट रहा है! ये मुझे पकड़े हुए हैं, पर मैं तो इनको छू भी नहीं पा रहा हूं! इनसे लडूं भी तो कैसे?

नहीं! लड़ना तो होगा! लड़ना होगा! मैं इनकी जमात में शामिल नहीं होऊंगा! इनको खत्म करने का एक रास्ता मुझे सूझ गया है! और उसके लिए मुझे अपनी गन तक पहुंचना होगा!
डोगा के जबड़े भिंच गए-
लॉयन जिम में, पसीने का दाम देकर मिली मांसपेशियां फड़ककर पत्थर जैसी कड़ी हो गईं-
एक इंच की दूरी भी पार करना एक मील की दौड़ लगाने के समान था! लेकिन डोगा, जान हार सकता था-
हिम्मत नहीं-
हाथ गन पर आ कसा-
और इस सफलता से डोगा के शरीर में जोश की एक नई लहर दौड़ उठी-
अतृप्त आत्माओं का दबाव, शरीर पर से हट गया-
और यह दबाव दुबारा आ पाने से पहले ही, पहली गोली दग चुकी थी-
दण्ड पर टिकी खोपड़ी के परखच्चे उड़ गए-
और आत्माओं के गायब होने के साथ ही, अघोरनाथ की आत्मा भी उनमें जा शामिल हुई-

डोगा, हेटोनेटो की तरफ मुड़ा, लेकिन-
अरे! हेटोनेटो मौके का फायदा उठाकर भाग चुका है! लेकिन अब वह मुझसे नहीं बचेगा! मैं उसको देर-सवेर ढूंढ ही लूंगा! फिलहाल तो मेरा पहला काम उस हेड-बम को फटने से रोकना है!
और उसको ढूंढना कोई मुश्किल काम नहीं होना चाहिए! क्योंकि बाहर पहरे पर तैनात मेरी कुत्ता फौज ने उसको जाते हुए जरूर देखा होगा!
और वे उसकी महक सूंघते हुए मुझे वहां तक ले जाएंगे, जहां पर वह हेड-बम अपना आतंक फैलाने गया हुआ है!
वाऊ, वी वाssss
सूंsम
वफ वाऊ वाऊ
एक लंबा सफर पलभर में पार करके रूपनगर के उस कब्रिस्तान में जा पहुंची, जहां पर दफन था एक 'जिन्दा मुर्दा'-
यह सुपर हीरो दूसरों से कुछ अलग है! पहले तो मुझको लगा कि मुझे इसे खत्म करने के लिए रूह शक्ति की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी! वे आत्माएं ही इसको समाप्त कर देंगी! लेकिन नहीं! ऐसा नहीं हुआ! यानी अब रूह शक्ति के प्रयोग का समय आ गया है! यह अभी एक 'मृत शरीर' से उलझने जा रहा है! और एक मृत शरीर को अगर कोई बचा सकता है तो सिर्फ दूसरा मृत शरीर!
वातावरण में फैलती हुई रूह ऊर्जा-
'एंथोनी गोंजालवेज'-

और ऐंथोनी की कब्र पर पुकार लगाने का मतलब था-
ऐंथोनी की आत्मा को मुर्दे के शरीर में प्रविष्ट कराके जिन्दा कराना-
और वह भी रूपनगर में नहीं, बल्कि मुंबई में! यह ऊर्जा-घेरा मुझे वहीं पर ले जा रहा है!
आज यह क्या हो रहा है! मेरे कानों तक किसी मजलूम की चीख पहुंचने के बजाय एक रहस्यमय ऊर्जा घेरा मुझे जगा रहा है! और यह घेरा मुझे आभास दिला रहा है कि एक जान खतरे में है! एक मुर्दे की जान!
मुंबई में रात के समय भीड़-भाड़ वाली जगह चुनिन्दा ही होती हैं! जैसे रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, बस अड्डे-
और नाइट बार तथा डिस्कोथेक! जहां जवान दिलों को नचाते हैं ताल पर थिरकते पैर! और मदहोश कर देते हैं-
लेकिन आज यह मदहोशी का आलम-
बेहोशी के आलम में बदलने जा रहा था! आज की रात कत्ल की रात थी-
ए ए! ये रैन बसेरा नहीं है! भीख मांगनी है तो कहीं और जाकर मांऽऽऽऽऽऽग!
DISCO
रंग बिरंगी रोशनियों में चमकता वह चेहरा हर थिरकते कदम को जड़ कर देने के लिए पर्याप्त था-
व... व्हाट इज दैट?

डर कर भागने का एक रास्ता उस भयावह आकृति ने रोक रखा था-
लेकिन कुछ ही पलों में सबका डर दूर हो गया-
क्योंकि वह शख्स भी उसी हंगामे में शामिल हो गया था-
ओह! हम बेकार ही डर रहे थे!
यिआह! इसने ऐसा मेकअप किया हुआ है!
बट व्हाट ए डांसर, ब्वाय्ज! ये तो प्रभुदेवा की भी छुट्टी कर सकता है!
लेकिन इसके मुंह, नाक और कानों से धुंआ क्यों निकल रहा है?
दिस मैन इज़ ए फ्रीक, यार! डिस्को में ऐसे ही बनकर आने में तो मज़ा है!
लेकिन तभी-
यस! वह यहीं पर है! कुत्ते मुझे ठीक जगह पर ले आए हैं!
हट जाओ, भागो! डिस्को खाली कर दो! यह इंसान नहीं एक बम है! मुर्दा बम!
ओफ! डिस्को की तेज आवाज के कारण कोई मुझे सुन नहीं रहा है! इस पांच हजार वॉट के म्यूजिक से भी तेज आवाज पैदा करनी पड़ेगी!
बंदूक दगते ही डिस्को में भगदड़ मच गई-
हर कोई सबसे पहले दरवाजे तक पहुंचना चाहता था-

जैसे बांध खोलते ही पानी तेजी से बह निकलता है, वैसे ही दरवाजे खुलते ही सारे डांसर डिस्को के बाहर जा निकले-
अब डिस्को में सिर्फ शिकार रह गया था, और शिकारी-
पर ये कह पाना मुश्किल था कि कौन शिकार है और कौन शिकारी-
तूने जिन्दों को यहां से बाहर निकाल कर सिर्फ कुछ ही इंसानों को मरने से बचाया है, क्योंकि यह डिस्को खाली होने के बावजूद भी यह इलाका अभी भी भीड़ से भरा हुआ है!
और जब इस शरीर का बम फटेगा, तो यह इतना शक्तिशाली होगा कि यह पूरा इलाका ही तबाह हो जाएगा!
मैं तुझे फटने से पहले ही उसी जहन्नुम में पहुंचा दूंगा जहां से तू आया है!
डोगा ने गन की पूरी मैगजीन मुर्दे पर खाली कर दी-
हा हा हा! तू मुझे मार नहीं सकता!
मैं तो पहले से ही मरा हुआ हूं न! हूं न?
लेकिन मैं तुझको अपनी जमात में जरूर शामिल कर सकता हूं! मुर्दों की जमात में!
धाड़ड़
आऽऽऽह! इतना शक्तिशाली वार! यह सच कह रहा है! मैं न तो इसे मार सकता हूं, और न ही फटने से रोक सकता हूं!
लेकिन एक काम जरूर कर सकता हूं! मैं इस एक डेडबम को कई सारे डेड बमों में काट सकता हूं! और जब वे डेड बम अलग-अलग जगहों पर फटेंगे तो शायद ज्यादा तबाही नहीं मचा पाएंगे, क्योंकि तब उनकी तबाही फैला पाने की शक्ति भी कई भागों में बंट जाएगी!
डोगा के हाथ में उसका शिकारी चाकू चमक उठा! लेकिन उसका इस्तेमाल कर पाना भी आसान नहीं था-

जब तक इसके हाथ रहेंगे, तब तक मेरा काम मुश्किल बना रहेगा। इसलिए सबसे पहले इसके बाजुओं को इसके धड़ से जुदा करना पड़ेगा!
डोगा के शक्तिशाली बाजुओं की शक्ति चाकू में स्थानांतरित हुई, और चाकू प्रक्षेपित मिसाइल की सी गति से एक बाजू को काटता हुआ पार निकल गया-
खच
और डेड बम के प्रतिक्रिया कर पाने से पहले ही डोगा के हाथ फिर से चाकू तक पहुंच चुके थे
और फिर, डेड बम एक-एक करके कई टुकड़ों में विभक्त होने लगा-
कच
और साथ ही बजी डोगा की सीटी के जवाब में-
डोगा की 'कुत्ता फौज' डेड बम के टुकड़ों को उठा-उठाकर और अलग-अलग ले जाकर ऐसे स्थानों तक पहुंचाने लगी-
जहां पर फटने से तबाही तो जरूर मचती, पर जान-माल का नुकसान नहीं होता-
देख! तेरा 'डेड-बम' बगैर कोई इंसानी जान लिए फट चुका है, अब सिर्फ सिर बचा है, और इसको, इसके अंजाम तक मैं खुद पहुंचाऊंगा!
वह 'हेड बम' फटने में तो शायद अभी कुछ पल बचे थे-
लेकिन शायद उससे भी बड़ा एक बम अभी फटना बाकी था-
आऽऽह! कौन?

इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: डोगा और एंथोनी का विशेषांक मर्द और मुर्दा

इंतजार तो मौत तेरा कर रही है डोगा! और मौत तथा तेरे बीच का पुल बनेगा, संथोनी! मौत मेरे जरिए ही तुझ तक पहुंचेगी!

इसीलिए मुझे न चाहते हुए भी इसकी कमजोरी का इस्तेमाल करना पड़ेगा!

नई मैगजीन से दगी उस गोली ने फायर हाइड्रेंट में ऐसे कोण पर छेद कर दिया, जिससे कि पानी की धार सीधे संथोनी के शरीर पर गिरे –

और पानी संथोनी की कमजोरी था–

संथोनी बहुत शक्तिशाली है! इसके चंगुल से छूट पाना वैसे ही मुश्किल है! और इस थकी हालत में तो मेरे लिए यह काम असंभव है!

लेकिन हरु ऊर्जा ने संथोनी के अंदर कुछ नई शक्तियां भी भर दी थीं–

आंखों से निकले 'हरु ऊष्मा' के एक ही वार ने उस छेद को बन्द कर दिया–

यह क्या हो रहा है? मेरे शरीर के अंदर घुसी ऊर्जा ने उसे नई शक्तियां प्रदान कर दी हैं मुझे अपने ही शरीर को निष्क्रिय करना होगा! वरना डोगा नहीं बचेगा!

प्रिंस! तू यहां पर मेरा पीछा करता-करता आ गया! वाह, अब तू ही मेरी मदद कर सकता है! मुझे तेरे शरीर को अपने कब्जे में लेना होगा!

प्रिंस ने आत्मा रूप में संथोनी को देख भी लिया, उसकी बात भी समझ ली, और अपनी स्वीकृति भी दे दी–

कुछ ही पलों में संधोनी की आत्मा प्रिंस के अंदर समा चुकी थी-
अब संधोनी से मैं निपटूंगा! क्योंकि अपने शरीर को निष्क्रिय करने का मुझे वह तरीका पता है, जो और किसी को नहीं पता!
और वह तरीका है संधोनी के दिल को बाहर निकाल लेना! दिल की धड़कन बन्द होते ही संधोनी का शरीर अपने-आप निष्क्रिय हो जाएगा!
अरे! ये कौआ तो संधोनी का पालतू है, प्रिंस!
लेकिन फिर भी ये संधोनी पर हमला कर रहा है! पालतू अपने मालिक को पहचानने में कभी भूल नहीं करते!
यानी ये इसका मालिक नहीं है! संधोनी के शरीर पर जरूर किसी और ने कब्जा कर लिया है! और जब उसका पालतू कौआ उसे मारने से नहीं हिचकिचा रहा तो मुझे भी संधोनी को खत्म करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए!
लेकिन होगा को फिलहाल कुछ करने की जरूरत नहीं थी-
ओफ! मेरी हरू ऊर्जा संधोनी के शरीर को कब्जे में लेने के बावजूद भी उसकी भावनाओं को कब्जे में नहीं ले पाई है! ये कौआ उसका पालतू है! इसीलिए संधोनी का शरीर उस पर वार नहीं कर रहा है! लेकिन मैं संधोनी की भावनाओं को भी बदलकर रहूंगा! कौए को मरना होगा!
क्योंकि प्रिंस रूपी संधोनी के शक्तिशाली चोंच प्रहार छाती में छेद करके दिल को बाहर खींच चुके थे-
और इससे पहले कि प्रिंस की चोंच नसों को काटकर दिल को शरीर से जुदा कर पाती, संधोनी की आंखें दहक उठीं-
आऽऽऽह! इतना भीषण वार! अगर इस वक्त प्रिंस के अंदर मेरी आत्मा न होती, तो प्रिंस परलोक सिधार गया होता!
ओह! संधोनी ने प्रिंस को बेहोश कर दिया है! अब जो करना है, मुझे ही करना है! पर मैं क्या... ओह समझ गया!

अगले ही पल डोगा की गन गरज उठी, और गोलियों के धक्कों ने संथोनी को पीछे की तरफ धकेलना शुरू कर दिया–
हवीं, हवीं! मुझ पर अपनी गोलियां क्यों बर्बाद कर रहा है डोगा! मुर्दे गोलियों से नहीं, तंत्र-मंत्रों से मरते हैं! और तुझ जैसे हिंसक को तो गायत्री मंत्र तक याद नहीं होगा!
तड़.तड़.
तड़.
मेरा मंत्र यह गोलियों की आवाज है, संथोनी! और इसका असर तो तुझे अभी सामने नजर आ जाएगा!
अरे! गोलियां खत्म!
विलिक
बदल ले! मैगज़ीन बदल ले! फिर मन भरके गोलियां दागले!
मैं तेरा 'गोली-भोज' पेट भरकर खाना चाहता हूं!
दिल तो मेरा भी यही कर रहा है संथोनी! पर क्या करूं? इतना वक्त भी नहीं है! क्योंकि...
... डेड बम की खोपड़ी अब फटने ही वाली है! फट गई!
वाह! अब मैं और 'डेड बम' बनाऊंगा! मेरा 'डेड बम' कामयाब रहा! डोगा का डर तो बहुत था, पर अपना बम फटने का नजारा देखने से मैं अपने-आपको रोक नहीं पाया!
बम सचमुच शक्तिशाली था! धमाका संथोनी के पेट को चीरता चला गया! और संथोनी का शरीर शांत पड़ गया–
ओह! डोगा बच गया! और संथोनी का शरीर निष्क्रिय होने के बाद से अब 'हरू ऊर्जा' ज्यादा देर तक इसके शरीर में नहीं रहेगी! अब मैं क्या... अरे! यह तो वही मानव है जिसने यह मृत बम बनाया था!
अब मैं इसकी खास जानकारी का प्रयोग करूंगा डोगा के साथ-साथ इस विशाल नगर को भी खत्म करने में! इसको हरू ऊर्जा की शक्ति देता हूं, और वह ऊर्जा इसे बताएगी कि इसको अपनी जानकारी का प्रयोग कैसे करना है! ज्ञान इसका होगा, शक्ति मेरी! हरू शक्ति!

अगले ही पल, निष्क्रिय पड़े संथोनी के शरीर में से रूह ऊर्जा निकलकर डेटोनेटो के शरीर में समाने लगी–
अगले ही पल- डोगा को डेटोनेटो की ललकार पर घूम जाना पड़ा–
डोगा! पीछे घूम, और अपनी मौत का सामना कर!
डेटोनेटो! अच्छा हुआ कि तू अपने- आप मेरे सामने आ गया!
वरना मेरी गोली तुझे ढूंढने के लिए न जाने कब तक भटकती रहती!
अब तेरी आत्मा भटकेगी डोगा! पर तेरी आत्मा अकेली नहीं होगी! उसके साथ- साथ पूरे मुंबई वासियों की आत्माएं भटकेंगी! श्मशान में बदल जाएगी मुंबई!
वह किरण टकराते ही डोगा के होशोहवास लुप्त होने लगे–
आर्रर्रर्घ! ...मेरे शरीर में तेज जलन हो रही है! आऽऽऽह! मेरी नसें मेरे शरीर से बाहर आ रही हैं!
तूने मुझसे कहा था न डोगा कि जब तेरे क्रोध का बम मुझ पर फटेगा तो मेरे चिथड़े उड़ जाएंगे! तो अब संभाल! तू एक चलता- फिरता बम बन गया है! और इस बम का बारूद है तेरा क्रोध! जो सचमुच इतना तीव्र है कि जब तू फटेगा, तो तेरा क्रोध- बम पूरी मुंबई के जीवन को नष्ट कर देगा!
संथोनी की आत्मा अब तक वापस उसके शरीर में समा चुकी थी–
मेरा शरीर जब भी क्षतिग्रस्त होता है तो अपने प्रतिद्वंद्वी के शरीर की मदद से ही फिर पूर्ण हो सकता है! इस बार डेड बस की खोपड़ी ने मेरे शरीर को पूर्ण कर दिया है!
लेकिन अब डोगा को फटने से रोकना मेरी जिम्मेदारी है!
और इसके लिए मुझे डोगा को बेहोश करना होगा! जैसे मेरे शरीर के निष्क्रिय होने पर तबाही रुक गई थी, वैसे ही शायद डोगा के शरीर के निष्क्रिय होने से क्रोध- बम भी निष्क्रिय हो जाएगा!

इसी वक्त, मुंबई से बहुत दूर महानगर और राजनगर के बीच में फैले रेगिस्तान के आकाश पर-
अभी तक तो कुछ भी नजर नहीं आया नागराज! तुम अपने दिमाग पर जरा जोर डालकर उस जगह के आस-पास का कोई 'लैंडमार्क' याद करो, जहां से तुमको उस 'ऊर्जा धारक' के होने के बारे में पता चला था।
आह!
क्या हुआ नागराज?
मुझे संकेत मिल रहे हैं! वह ऊर्जा फिर से गड़बड़ी फैला रही है!
और इस बार यह गड़बड़ मुंबई में हो रही है! मुझे जाना होगा ध्रुव! मुझे जाना होगा!
नागराज का शरीर एक बार फिर हवा में घुलने लगा! लेकिन ध्रुव को उधर ध्यान देने का मौका नहीं मिल पाया-
उसको कुछ नजर आ गया था-
रेगिस्तान के बीच में एक कार! शायद यहां पर से कोई क्लू मिलेगा?
ध्रुव तेजी से नीचे उतरा-
कार तो खाली है! शायद कार का मालिक कहीं आस-पास गया होगा!
ध्रुव ने थोड़ी देर में पूरा इलाका छान मारा! लेकिन-
कार का मालिक तो कहीं भी नजर नहीं आया! पर ट्राई पॉड पर खड़ा यह कैमरा जरूर नजर आया है! यानी कार का मालिक कोई फोटोग्राफर है!
कार का नंबर तो राजनगर का ही है! कार के नंबर और इस कैमरे की मदद से उस फोटोग्राफर का पता लगाना कोई मुश्किल काम नहीं है! और एक बार वह मिल जाए तो यह पता चल सकता है कि आखिर यहां पर हुआ क्या था?
लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि फोटोग्राफर अपनी कार और कैमरा छोड़कर आखिर गायब कहां हो गया? और कैसे गया?
RJ-1C-2059D
ध्रुव सवालों के भंवर में घिरा था-

और उधर डोगा सुलगाती नसों के जाल में फंसा था–
हर शक्ति के वार ने उसकी सोचने समझने की ताकत को पहले ही हर लिया था! और संथोनी के इस वार ने उसके क्रोध को और भड़का दिया था–
तड़.
तू मुझ पर बेवजह वार कर रहा है! दो बार तो तेरे वारों को मैंने सह लिया!
लेकिन अब मैं तुझे वार करने लायक ही नहीं छोडूंगा!
डोगा के हर वार के साथ उसका क्रोध भी बढ़ता जा रहा था, और उसकी नसों से निकलते धुंए की मात्रा भी–
धड़ाक
हा हा हा! अब तू ही इसे रोक सकता है संथोनी! मार संथोनी! मार डोगा को! और क्रोध बम बन चुके इसके शरीर को फटने से बचा ले!
डेटी नेटो के व्यंग्य ने संथोनी को भी भड़का दिया–
वह वार करने के लिए आगे लपका लेकिन तभी किसी ने उसके पैरों को थाम लिया–
सांप! नागरस्सी! यानी... यानी...
...नागराज यहां पर आ चुका है!
हां, संथोनी! मैं इस पागल के मुंह से तुम्हारा नाम सुन चुका हूं! और तुम्हारे बारे में मैं भी जानता हूं!
मुझे इसकी बातों से यह भी पता चल चुका है कि डोगा को इसने किसी तरह से 'क्रोध-बम' में बदल दिया है!...

...और डोगा का क्रोध तो पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। अगर डोगा का शरीर सचमुच फट गया तो इसके शरीर से निकली 'क्रोध तरंगें' मुंबई को लाशों के शहर में बदल देंगी!
नागराज की विषफुंकार से डेटो नेटो बेहोश होकर नीचे आ गिरा—
और डोगा के शरीर को निष्क्रिय सिर्फ इसे बेहोश करके ही किया जा सकता है!
संथोनी एक बार फिर डोगा पर टूट पड़ा—
धमाक!
और निष्क्रिय होते ही उसके शरीर से हर ऊर्जा निकलकर अपने सबसे पास के हर ऊर्जा स्त्रोत यानी नागराज में समाने लगी—
देखा नागराज! ऐसे ही हमको डोगा के शरीर को भी निष्क्रिय करना है, ताकि उसके शरीर में घुसी शैतान ऊर्जा भी बाहर निकल जाए, और डोगा भी सामान्य हो जाए!
नहीं संथोनी, नहीं! ऐसा करके तुम डोगा के गुस्से को और भड़का रहे हो, और इसके क्रोधित होने के साथ-साथ इसका शरीर फटने के और करीब पहुंचता जा रहा है!
हमको इसे रोकने का कोई और तरीका ढूंढना होगा!
हवीं, हवीं हवीं! डोगा के क्रोध को रोकने का कोई तरीका नहीं है नागराज! अच्छा हुआ कि तू भी यहां मरने के लिए खुद ही पहुंच गया है! अब तू मरेगा और तेरे शरीर की हर ऊर्जा मुझे वापस मिल जाएगी!
अब तू सांप छोड़े या विष फुंकार, डोगा को मैं निष्क्रिय होने नहीं दूंगा!
तुम्हारा वार करना बेकार है संथोनी, जब मेरी फुंकार तक इस पर असर नहीं डाल पा रही है तो भला तुम्हारे वारों से क्या होगा!
तो क्या डोगा के साथ-साथ करोड़ों लोग काल के गाल में चले जाएंगे?
नहीं, संथोनी! डोगा के अंदर भरी क्रोध ऊर्जा हिंसा का ही एक रूप है! और गांधी जी के अनुसार हिंसा को सिर्फ एक चीज मार सकती है।...
...और वह है अहिंसा!
नागराज अपने आप क्रुद्ध डोगा के सामने खड़ा हो गया

और विषफुंकार खाकर क्रुद्ध डोगा का पहला वार खाकर दूर जा गिरा-
मैं इसको रोकता हूं नागराज!
नहीं, संथीनी! चुपचाप खड़ी रहो! तुम कुछ नहीं करोगी, कुछ भी नहीं!

नागराज उठा, और दुबारा डोगा के सामने आ खड़ा हुआ-
होशोहवास खोया डोगा कुछ पलों तक नागराज को आश्चर्य से निहारता रहा-
?
शायद
उसे नागराज के वार की प्रतीक्षा थी! पर नागराज शांत खड़ा रहा-

और डोगा की लात दुबारा उठ गई -
यह सिलसिला चलता रहा! डोगा नागराज पर वार करता रहा, और नागराज बार-बार उठकर उसके सामने आकर खड़ा होता रहा-

बगैर होशो हवास के भी डोगा यह साफ-साफ महसूस कर रहा था कि जो पलटकर वार न करे उस पर वार करना कितना कठिन होता है-
डोगा की क्रोधाग्नि के लावे को नागराज के संयम का पानी ठंडा कर रहा था-
डोगा का क्रोध शांत हो रहा था-
फूली नसों ने धुआं उगलना बंद कर दिया था-

और अब वे फूली नसें भी पिचक कर डोगा की मांस-पेशियों के अंदर छिपती जा रही थीं-
क्रोध-बम को अहिंसा ने डिफ्यूज कर दिया था-

अब मैं और बर्दाश्त नहीं कर सकता! यह मेरी तीसरी हार है! देवों ने इस सृष्टि में मानव को बनाकर मेरा काम मुश्किल कर दिया है! ये मानव शक्ति के साथ-साथ बुद्धि का भी प्रयोग करके हर शक्ति को बार-बार हरा रहे हैं मुझे कोई ऐसा स्थान ढूंढ़ना होगा जहां से मैं विनाश और फिर हर सृष्टि का शुभारंभ कर सकूं!

मैं हार नहीं मानूंगा! हरू शक्ति कभी हार नहीं सकती! मैं चाहूं तो एक झटके में वैसे ही इस पृथ्वी पर का पूरा जीवन तबाह कर दूं, जैसे करोड़ों साल पहले किया था! लेकिन अगर मैंने वैसा ही किया तो इस पृथ्वी पर हरू सृष्टि को भी पनपने में बहुत समय लगेगा! और उस दौरान देवता भी कुछ गड़बड़ कर सकते हैं। यह खतरा मैं मोल नहीं लूंगा! इस बार तबाही के लिए ऐसी जगह को ढूंढना पड़ेगा, जहां पर की गई तबाही से यह पूरा भूभाग ही डोल उठे! और हरू शक्ति की धाक जम जाए!

और मेरी हरू शक्ति बता रही है कि वह स्थान यह है... जिसको यहां के मानववासी 'दिल्ली' नाम से बुलाते हैं! कैसा अजीब नाम है!
मुंबई में फैलने वाला कोहराम अब अपना रुख भारत की राजधानी दिल्ली की तरफ कर रहा था-
और दिल्ली में अगर पत्ता भी कांपता है तो पूरा हिन्दुस्तान हिल जाता है-

राजनगर में इस कोहराम को रोकने के पूरे प्रयास किए जा रहे थे-
कार के नंबर से इसके मालिक का तो पता चल गया है, ध्रुव! लेकिन यह कार उसने अभी दो दिन पहले ही किसी के हाथों बेच दी है! उस भुलक्कड़ मालिक को खरीदने वाले का नाम तक याद नहीं है! और ट्रांसफर पेपर अभी पूरे न बन पाने के कारण हमको उस कार के नए मालिक का नाम पता कुछ भी मालूम नहीं पड़ रहा है!

यानी एक रास्ता बंद हो गया है! अब मेरे पास सिर्फ यह कैमरा है! लेकिन एक कैमरे से उसके मालिक का पता कैसे चल सकता है?
खोया-पाया में छपवा दें?
इतना वक्त हमारे पास शायद न हो!

पर... यस! एक तरीका है! यह कैमरा जरा पुराना है! और यह कभी न कभी खराब जरूर हुआ होगा! और ऐसे प्रोफेशनल कैमरे ठीक कर पाने वाले राजनगर में कुछ ही लोग हैं! उनसे यह पता चल सकता है कि इस कैमरे का मालिक कौन है?
इस काम में समय लगना था-

और शायद दिल्ली वालों के पास उतना वक्त नहीं था-
आहा! यहां पर कोहराम मचाने में मजा आएगा! अब तक मैंने जितने भी 'हरू शक्ति प्राणियों' को सृष्टि का विनाश करने के लिए भेजा, उनको मानव देख सकते थे, और इसीलिए उनसे लड़ सकते थे! लेकिन इस बार ऐसा 'हरू शक्ति धारक' विनाश करेगा, जो मानवों को नजर ही नहीं आएगा! और इस बार मैं यह शक्ति प्रदान करूंगा किसी ऐसे मानव को, जो खुद ही इस सृष्टि का विनाश करने की इच्छा रखता हो! और ऐसा मानव इस स्थान पर मिल सकता है!
जिला कारागार

ऐसे मानव तो काफी तादाद में उपलब्ध थे! लेकिन उनमें से भी कुछ मानव काफी खास थे-
यार, इस कैदी में ऐसी क्या खास बात है, जो इसे अंधेरे में रखा हुआ है! न मोमबत्ती न बल्ब, न ट्यूबलाइट!
212
इसके लिए बल्ब बाहर जलता है! क्योंकि इसमें आग लगाने का पागलपन है! बल्ब भी जलाएं तो क्या पता शॉर्ट सर्किट करके आग लगा दे! इसको तो हम माचिस की जली तीली तक नहीं देते!
यह अल्फा मैन है!

तुम लोग मुझे बंद करके नहीं रख सकते! मुझे आग लगानी है! चाहे मुझसे जेल का चूल्हा ही जलवा लो! लेकिन ऐसे तो मैं घुट-घुट कर मर जाऊंगा! बगैर आग लगाए तो मैं जी ही नहीं सकता!
तुम आग लगाओगे! सारी दुनिया को जलाओगे! और ठहाके भी लगाओगे!
यह मेरा वादा है!

दिल्ली- जहां हरदम लहराता है तिरंगा-
ESTD 1953
अरे! कोई बचाओ! इस बिल्डिंग में अचानक न जाने कैसे आग लग गई है! और एक अंधी बच्ची अंदर ही रह गई है!
घबराओ मत! मैं उसे बाहर निकाल लाऊंगा!

कुछ ही पलों में तिरंगा ने उस बच्ची को ढूंढ निकाला था-
वह रही लड़की ! लेकिन वह तो घबराहट में उधर ही भाग रही है, जिधर एक जलता शहतीर गिरने वाला है !
रुक जाओ, उधर मत जाओ !
लेकिन लड़की रुकी नहीं-
और जलता शहतीर उसके ऊपर गिरने लगा-
उसी पल-तिरंगा का हाथ लहराया-
ढाल हवा में सरसराई-
लेट जाओ बेटी ! जमीन पर लेट जाओ !
और जलता हुई शहतीर उस बच्ची के बदन को छू नहीं सका-
तिरंगा ने उस तक पहुंचने में एक पल भी नहीं गंवाया-
वो... वो... आग लगा रहा है ! उसे रोको, अंकल ! उसे रोको !
यह बच्ची क्या कह रही है ? कौन आग लगा रहा है ? और यह अंधी बच्ची उसे देख कैसे पा रही है ? अरे...
जिस रास्ते से मैं अंदर आया, उस पर अचानक शोले भड़कने लगे हैं ! यह कैसे हुआ ? खैर जल्दी बाहर निकलना होगा !
मैं तो इस आग से शायद बच जाऊं लेकिन छोटी लड़की को नुकसान पहुंच सकता है, उसे आग से बचाना होगा ! पर कैसे ? हां पानी ! शायद पानी उसे बचा सके !
किस्मत से बाथरूम में पानी मौजूद था-
इसमें अगर मैं अपना तिरंगा लबादा भिगो लूं...

...तो मैं इसमें बच्ची को लपेट कर आराम से बाहर निकल सकता हूं!
अंकल, वह हमारे पीछे आ रहा है! जल्दी भागो!
यह लड़की क्या कहे जा रही है? मुझे तो पीछे आता कोई नजर नहीं आ रहा है! शायद धुंए ने इसके दिमाग पर कुछ असर डाला है!
अंकल, वह हाथ आगे बढ़ा रहा है! कुछ छू रहा है!
और बच्ची की चेतावनी के लगभग साथ-साथ ही तिरंगा का शरीर लपटों में घिर गया-
तिरंगा अब बच्ची को छोड़ देने के लिए मजबूर था-
मुझे आग जल्दी से जल्दी बुझानी होगी! और उसका सबसे आसान रास्ता अपने गीले लबादे को अपने शरीर पर लपेट लेना है!
?
हीं हीं हीं! अब तू नहीं बचेगी प्यारी-प्यारी बच्ची! तुझे मारते हुए मेरा दिल खून के आंसू रो रहा है! पर क्या करूं? तेरी दृष्टि की सीमा वहां से शुरू होती है, जहां पर मानवों की सीमा खत्म होती है! इसीलिए अपनी असामान्य दृष्टि से तू मेरे अदृश्य रूप को देख पा रही है। ऐसा सिर्फ तू ही कर सकती है, और यही कारण है तेरे मरने का!
अंधी बच्ची की आंखें भय से फटने लगीं, और अनचाहे ही उसके गले से चीखें निकलने लगीं-
और जब एक कातर स्त्री-स्वर वातावरण में फैलता है-
बचाऽऽऽ
ऽऽऽऽ ओऽऽ

तो चंदा के शरीर में सूक्ष्म रूप में स्थित शक्ति अपना रूप चंदा के ऊपर फैलाने पर विवश हो जाती है।

बचाऽऽ

ओऽऽऽऽऽ

एक... एक बच्ची मुझे पुकार रही है! एक नेत्रहीन बालिका! मुझे जाना होगा!

ऐसा भला कौन दरिन्दा हो सकता है, जो एक नेत्रहीन मासूम बालिका को चीखने पर विवश कर रहा है!

प्रकाश की गति से उड़ती शक्ति को-

घटनास्थल पर पहुंचने में देर तो नहीं हुई, लेकिन-

तुम क्यों चीख रही हो बेटी? कौन तुमको परेशान कर रहा है?

क्या वह इनमें से कोई है?

नहीं आंटी! वह है वह! हमारी तरफ आ रहा है! मुझे बचा लो आंटी! मुझे बचा लो!

मुझे तो कोई नजर नहीं...

अगले ही पल- शक्ति चीख उठी-

हवीं, हवीं हवीं! इस मानवी के अन्दर तो देव ऊर्जा है! और इसने हरू ऊर्जा का स्पर्श होते ही उसे पहचान लिया है! यानी अब देव ऊर्जा और हरू ऊर्जा की सीधी टक्कर होगी! वाह! हवीं हवीं! इसमें तो बहुत मजा आएगा!

आऽऽऽह! विचित्र ऊर्जा का वार है! लेकिन यह ऊर्जा मुझे कुछ जानी-पहचानी सी लगी है! ओह! हे महादेव! यह तो हरू ऊर्जा है! लेकिन हरू इस ब्रह्मांड भाग में कैसे आ गए?

यह बच्ची अंधी जरूर है, लेकिन इसमें शायद हरू ऊर्जा को देख सकने की अद्भुत क्षमता है! आस पास अवश्य ही कोई हरू प्राणी है! और वह अपने अदृश्य रूप को मेरी ज्वाला से नहीं छिपा सकता!

इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: डोगा-शक्ति, बांबी, ध्रुव-शक्ति

शक्ति की अग्नि लहरों ने अल्फा मैन की अदृश्य आकृति को घेरकर स्पष्ट कर दिया-

यह बच्ची सही कह रही थी! लेकिन अब तू अदृश्य नहीं है! अब मेरे साथ-साथ तुझे सभी देख सकते हैं!

अब ये तुझे भी देखेंगे, और तेरे नष्ट होने के नजारे को भी!

और उसी पल अदृश्य हो चुके अल्फा-मैन ने उस पर एक वार और कर दिया-
आऽऽह!
लेकिन इस दृश्य ने तिरंगा को अवश्य सतर्क कर दिया था-
अंकल, वह हमारे पीछे आ रहा है! मुझे मारने आ रहा है!
घबराओ मत बेटी! मैं उसको तुम तक कभी पहुंचने नहीं दूंगा!
यह कह पाना मुश्किल था कि तिरंगा कब तक बच्ची को बचा पाता-
शक्ति तो कुछ पलों के लिए बेसुध हो गई थी-
और अगले ही पल-
वह गायब हो गया, अंकल! अब वह मुझे कहीं नजर नहीं आ रहा है!
लेकिन शायद तिरंगा की परीक्षा का समय अभी नहीं आया था-
नहीं नहीं! मैं फिर वही गलती कर रहा हूं, जो मुझे नहीं करनी चाहिए! मेरा मुख्य लक्ष्य, सृष्टि का विनाश है! और मैं हर बार अपने इन प्राणियों को किसी न किसी एक मानव से लड़वाता रह जाता हूं!
अगर यह छोटी मानवी अल्फा-मैन को देख भी सकती है तो उससे भला नुकसान क्या होगा? उसके देखने के बावजूद देव शक्ति से भरी इस शक्ति को भी अल्फा-मैन की इस शक्ति ने पटखनी दे ही दी! अब मैं बच्ची का पीछा नहीं, बल्कि विनाश करवाऊंगा अल्फा-मैन से!
ओह! शुक्र है भगवान का! लेकिन यह कहीं उसकी कोई चाल न हो! तुम चारों तरफ देखती रहना, और चौकन्नी रहना!
इस आदमी की शक्ल मैंने कहीं देखी है! पर याद नहीं आ रहा है कि कहां? अगर याद आ जाए तो शायद इसे रोकने का कोई तरीका भी निकल आए!

लेकिन फिलहाल तो सबसे बड़ा सवाल यह है कि वह गया तो कहां गया? और क्या करने गया है?
अल्फा मैन ने दिल्ली को नष्ट करने के लिए एक उचित स्थान ढूंढ लिया था-
मेरा 'हस्त ज्ञान' बता रहा है कि यह फैक्ट्री, रासायनिक पदार्थों का एक भंडार रखती है! अगर इन रासायनिक पदार्थों की गैसें दिल्ली के वातावरण में घुल जाएं तो पहले से ही प्रदूषण से परेशान दिल्ली के प्राणियों के प्राण, फटाफट उनके शरीर से निकल जाएंगे!
AMMONIA TANK
श्री बाला जी केमिकल वर्क्स
अदृश्य रूप में यह काम करना अल्फा मैन के लिए बच्चों का खेल था-
लेकिन शायद किस्मत उसके साथ नहीं थी-
?
पास से गुजरते, एक ट्रक की धूल ने उसकी आकृति को अदृश्य नहीं रहने दिया था-
रामसिंह! उधर कोई है! कुछ भूतहा सी आकृति है! इसके इरादे नेक नहीं लगते! गोली चलाओ!
सतर्क इंडस्ट्रियल फोर्स के गार्डों की रायफलें तड़तड़ा उठीं-
लेकिन-
हीं हीं हीं! मुझ पर गोलियां भला क्या असर करेंगी? प्रकाश भी जिसके आर-पार चला जाए, उसे गोलियां क्या रोकेंगी? हीं हीं हीं!
मैं तो अपना वह काम करके ही जाऊंगा, जो मैं करने आया हूं!
एक ही स्पर्श से रासायनिक द्रव से भरा वह टैंक सुलग उठा-

और चारों तरफ भगदड़ मच गई–
भागो! अगर यह टैंक फट गया तो हमारे सिर्फ हड्डी के ढांचे बचेंगे!
लेकिन भागोगे कहां? इसका असर तो पूरी दिल्ली में फैल जाएगा, और वह भी आधे घंटे में! इतनी जल्दी भला कहां भाग पाओगे?
खतरे का सायरन घनघनाने लगा–
और इतनी गड़बड़ उस रक्षक को बुलाने के लिए काफी थी–
जिसको दिल्ली वाले कहते हैं–
परमाणु–
हे भगवान! यह अमोनिया टैंक तो फटने वाला है!
इसमें लगी आग बेकाबू हो चुकी है!
लेकिन परमाणु के रहते ऐसा नहीं होगा! अगर जाएगी भी तो सिर्फ एक जान...
...परमाणु की!
कड़ड़ड़.
और अगर यह फैक्ट्री में ही फट गया तो इसके साथ-साथ और केमिकल के टैंक भी फट पड़ेंगे, और इनकी गैसें दिल्ली को श्मशान बना देंगी!
पलक झपकते दहकता टैंक, हवा में कई किलोमीटर ऊपर था–
और यहां पर फटने से वह किसी को नुकसान नहीं पहुंचा सकता था! परमाणु को भी नहीं, क्योंकि–
शुक्र है, मैं इसको फटने से पहले इतनी ऊंचाई तक तो ले आया, अब मैं अपने आपको परमाणु कणों में बदलकर खुद भी इस धमाके से बच सकता हूं!

आहा! इस सुपर हीरो परमाणु ने अल्फा-मैन का पहला वार बेकार कर दिया है! लेकिन अभी तो इस फैक्ट्री में ऐसे रसायनों का बहुत बड़ा भंडार है! देखते हैं कि यह परमाणु कब तक कामयाब होता रहता है!

परमाणु इस कांड की तहकीकात करते वापस फैक्ट्री पहुंच चुका था-
और फिर वह दरवाजे को गलाता हुआ अंदर घुस गया! अंदर जाते हुए भी हम उसको नहीं देख पाए!
यह आग जरूर उसी ने लगाई है!
ओह! अगर ऐसा है तो वह अदृश्य व्यक्ति यहीं कहीं...

परमाणु, उस अंडरग्राउंड टैंक ने भी आग पकड़ ली है! उसमें जो रसायन है, वह जलने पर अत्यधिक जहरीली गैस पैदा करता है!
अंडरग्राउंड टैंक! यानी जमीन के नीचे बना टैंक! उसको तो उठाया भी नहीं जा सकता!

हीं हीं ही, परमाणु! अब इसे फटने से बचा तो जानूं!
यह केमिकल जहरीला होने के साथ-साथ ज्वलनशील भी है! आग तेजी से चारों तरफ फैल गई है, और जहरीली गैस निकलनी शुरू हो गई है!

ऐसी आग को पानी से नहीं बुझाया जा सकता है! मिट्टी से ढकने पर शायद यह बुझ सके! पर इतनी मिट्टी तुरंत आएगी कहां से? ओह! अब जहरीली गैस का असर मुझ पर भी हो रहा है!
परमाणु नीचे गिरने लगा, उसके होश तेजी से गायब हो रहे थे-
लेकिन उसका शरीर टैंक से नहीं टकराया-
किसी के हाथ ने उसको थाम लिया था-

नागराज 'हरू ऊर्जा' का आभास पाकर मुंबई से दिल्ली पहुंच चुका था-
नागराज! तुम यहां पर कैसे आ गए?
यह समझाने का वक्त नहीं है, परमाणु! मुझे जल्दी-जल्दी बताओ कि यहां पर आखिर हो क्या रहा है?
परमाणु, नागराज को सारा घटनाक्रम तेजी से सुनाता चला गया-
ओह! यानी इस बार उस 'ऊर्जा-धारक' ने कोई अदृश्य प्राणी रचा है! उसको तो हम ढूंढ ही लेंगे! लेकिन सबसे पहले हमको इस टैंक को फटने से रोकना है, ताकि जहरीली गैसें दिल्ली के वातावरण में घुल-कर किसी की जान न ले सकें!
आग तेज हो चुकी है नागराज! और जहरीला धुआं पहले से ही वातावरण में घुलने लगा है! अब इस धुएं को फैलने से रोकूं या टैंक की आग को बुझाने की सोचूं?
यह धुआं नागराज के जहर से अधिक जहरीला नहीं हो सकता है! मैं जहरीले धुएं को अपने अंदर समेटकर फैलने से रोकता हूं! तब तक तुम टैंक की आग बुझाने का उपाय सोचो!
नागराज जहरीले धुएं को तेजी से अपने अंदर खींचने लगा-
और परमाणु ने अपना ध्यान आग बुझाने के तरीकों पर केंद्रित करना शुरू कर दिया-
इसको मिट्टी से ढकना ही एक-मात्र उपाय है ताकि मिट्टी इस आग तक ऑक्सीजन की पहुंचने से रोक दे! और कोई भी आग बगैर ऑक्सीजन के जल नहीं सकती!
मैं अभी अरे! इस आग की वायु में मौजूद ऑक्सीजन से काटने का काम तो मेरी एटम शील्ड भी कर सकती है!
परमाणु ने परमाणु-छल्लों का एक कवच सुलगते टैंक के ऊपर ढकना शुरू कर दिया-

इसी दौरान- तिरंगा के दिमाग में 'अल्फा मैन' की शक्ल कौंध चुकी थी-

यह असंभव है तिरंगा! इस जेल से, समय से पहले छूटने का सिर्फ एक ही तरीका है! किसी प्लेन को हाईजैक करो, और फिरौती के रूप में बंद अपराधी को छुड़वा लो! और कोई तरीका नहीं है! और अल्फा-मैन के लिए अभी तक किसी ने कोई प्लेन, हाइजैक नहीं किया है! वह यहीं पर बंद है! मेरा यकीन करो!

मुझे यकीन है जेलर साहब!

लेकिन फिर भी मैं अल्फा मैन को अपनी आंखों से देखना चाहता हूं!

जेलर साहब, इसके सेल का दरवाजा खोलिए!

कुछ ही मिनटों के अन्दर-

तड़ाक

हल्क इस नए डेवलपमेंट से अंजान था–
मेरी हल्क शक्ति का हमला दो बार विफल हो गया! नागराज और परमाणु को रास्ते से हटाए बगैर दिल्ली को नष्ट करना संभव नहीं लगता है! इसलिए इन दोनों को रास्ते से हटाना ही होगा! हटाना ही होगा!
और अगले ही पल किसी नई मुसीबत की खोज रहे नागराज और परमाणु, ऊष्मा किरणों का वार खाकर चीख उठे–
नागराज! तुम ठीक तो हो न? मुझे तो मेरी एस्बेस्टस की पोशाक ने बचा लिया! लेकिन तुम शायद घायल हो गए हो?
मेरे घाव जल्दी ही भर जाएंगे, परमाणु! लेकिन हम पर हमला करके उस अदृश्य व्यक्ति ने हमको अपनी स्थिति बता दी है!
अब मैं ऐसा इंतजाम करता हूं कि हम उसको देख सकें!
नागराज के सर्पों ने अल्फा-मैन की आकृति से टकराना शुरू कर दिया–
ओह! मेरी सर्प सेना इससे टकराकर जलती जा रही है! लेकिन इस तरह से बनी अग्नि-रेखाओं द्वारा इसकी स्थिति साफ दिख रही है!
अब बाकी का काम तुम मुझ पर छोड़ दो नागराज!
परमाणु ब्लास्ट, अल्फा मैन के शरीर से टकराए–

और 'अल्फा मैन' बुरी तरह से तड़पने लगा–
ओफ़! हांलाकि ये परमाणु वार अल्फा मैन पर घातक असर नहीं कर रहे हैं, लेकिन अल्फा मैन को ऐसा महसूस हो रहा है, जैसे छोटे-छोटे कंकड़ों का कोई तूफान उससे टकरा रहा है! इसको सोचने का मौका नहीं मिल रहा है! इसको परमाणु ब्लास्टों से बचाना होगा! और यह काम बहुत आसान काम है!
मेरे परमाणु ब्लास्ट इस पर असर कर रहे हैं नागराज!
अब यह नहीं बचेगा!
इन परमाणुओं के जो कण 'अल्फा मैन' को परेशान कर रहे हैं, वे मुख्यत: इलेक्ट्रान हैं! ऋण कण! और अल्फा मैन का शरीर घन आवेशित है, यानी पॉजिटिव चार्ज वाला! पॉजिटिव चार्ज का होने के कारण ही अल्फा मैन का शरीर, निगेटिव चार्ज वाले इलेक्ट्रानों को आकर्षित कर रहा है! अगर अल्फा मैन के शरीर का चार्ज बदल दिया जाए तो आकर्षण विकर्षण में बदल जाएगा!
विकर्षण अर्थात् रिपल्शन! दूर धकेलना–
और विकर्षण पैदा होते ही, एटामिक ब्लास्ट के इलेक्ट्रानों के तूफान ने अपना रुख बदल दिया–
आऽऽऽह! यह क्या हो रहा है! एटामिक ब्लास्ट पलटकर मेरी ही तरफ आ रहा है! आऽऽऽह!
ओह! परमाणु अपने ही ब्लास्ट से घायल हो गया है! और वह आकृति फिर से अदृश्य हो गई है!
अब वह न तो अदृश्य रह पाएगा, और न ही बच पाएगा नागराज!
तिरंगा तुम! और ये... ये तो...
...अल्फा मैन है नागराज! बल्कि कहो कि अल्फा-मैन का शरीर है जो अपने ऊर्जा रूप को किसी तरह से प्रक्षेपित कर रहा है!
लेकिन यह अंधी लड़की उस रूप को देख सकती है!

पूरे घटनाक्रम पर नजर रखने वाला हरू चौंक उठा–
ओह! ये तो अल्फा मैन के ध्यान में लीन शरीर को यहां पर ले आया! अगर ये इसके शरीर को इसके 'हरूरूप' के साथ जोड़ने में कामयाब हो गया तो मेरी हरू शक्ति अल्फा मैन के शरीर में ही सिमटकर रह जाएगी! ऐसा नहीं होना चाहिए! अगर शरीर यहां पर है तो हरू रूप कहीं और जाकर तबाही मचाएगा! तबाही मचाने के लिए तो सैकड़ों स्थान हैं!
और कैमिकल फैक्ट्री में अंधी लड़की अचानक चीख उठी–
वह दूर जा रहा है, अंकल! उड़ता हुआ जा रहा है!
ओह! यानी अल्फा मैन ने अपनी चाल बदल दी है! खतरा भांपकर यहां से भागने की कोशिश कर रहा है! और यह जहां भी जाएगा, जब तक हम इसका पता लगाकर वहां पर पहुंचेंगे, तब तक यह वहां से भी भाग लेगा! हम इसका शरीर उठाए- उठाए कब तक घूमते रहेंगे!
लेकिन इसको भागने से रोकें तो रोकें कैसे नागराज?
ये रुकेगा...
...क्योंकि इस बार मैं यह जानती हूं कि मुझे किससे लड़ना है! इस बार हरू शक्ति देव शक्ति को मात नहीं दे पाएगी!
अंधी लड़की द्वारा इंगित दिशा में शक्ति का तीव्र ऊष्मा वार लपक पड़ा–
और अल्फा मैन की बाह्य आकृति हीटर के तार की तरह लाल होकर नजर आने लगी–

अब मैं तुझे गायब नहीं होने दूंगी! और तेरी हरू शक्ति को अपनी देव शक्ति से परास्त कर दूंगी!

शक्ति के दूसरे हाथ से देव शक्ति निकलने लगी-

आऽऽऽह!

दो विपरीत शक्तियां हरू और देव आपस में टकरा गई, और रात के आकाश में जैसे एक नया सूरज चमकने लगा-

हरू प्राणी चौंक उठा-

ओह! देव शक्ति और हरू शक्ति आपस में टकराकर एक दूसरे को नष्ट कर रही है! अल्फा मैन में इतनी हरू शक्ति नहीं है कि वह इस स्त्री में भरी देव शक्ति का मुकाबला कर पाए! मुझे अल्फा-मैन की ओर हरू शक्ति देनी होगी!

हरू शक्ति का बहाव अल्फा मैन की तरफ बढ़ चला! और अल्फा मैन में हरू शक्ति की मात्रा बढ़ने लगी-

आऽऽह! मेरी देव शक्ति तेजी से नष्ट हो रही है! और देव शक्ति के कम होते ही मैं चंदा के रूप में आ जाऊंगी! यह रहस्य अगर खुल गया तो मैं चंदा के शरीर में वास नहीं कर पाऊंगी! मुझे वापस स्वर्गलोक जाना होगा! नहीं ऐसा नहीं हो सकता!

शक्ति असमंजस में पड़ रही थी! और इसका फायदा-

उठाने में अल्फा मैन ने एक पल भी नहीं गंवाया-

हरू शक्ति का एक प्रचंड वार शक्ति के शरीर से आ टकराया-

आऽऽऽह! मुझे कुछ पलों के लिए इस लड़ाई से हटना होगा! अपनी देव-शक्ति को संभालना होगा! वर्ना खत्म हो जाएगी शक्ति, और रह जाएगी सिर्फ चंदा!

और वहीं पर-

परमाणु! तुम ठीक तो हो न? क्या हुआ था तुमको?

मैंने प्रोबॉट से अभी अभी संपर्क किया था नागराज! उसके अनुसार अल्फा मैन ने अपने शरीर के पॉजिटिव चार्ज को निगेटिव कर लिया था!

इसीलिए 'रिपल्शन' हुआ, और मेरा वार पलटकर मुझी को आ लगा!

नागराज का दिमाग तेजी से चलने लगा-

समझा! यानी परमाणु ब्लास्टों से बचने के लिए अल्फा मैन ने अपनी 'हरू ऊर्जा' का चॉर्ज बदल लिया! अब कुछ-कुछ समझ में आ रहा है! अल्फा मैन ऊर्जा का रूप है! इसको अगर कोई नष्ट कर सकता है तो इसके जैसी ही कोई और ऊर्जा!
वही ऊर्जा, जो मेरे अंदर भी कैद है!

तभी-
ओह! शक्ति, यह तुमको क्या हो गया है?
मैं शक्तिहीन हो रही हूं नागराज! मुझे शक्तियां समेटने में कुछ पलों का वक्त लगेगा!

अंकल, वह फिर दूर जा रहा है!
यानी भाग रहा है! और इस बार उसको रोकने का हमारे पास कोई रास्ता नहीं है!
है, तिरंगा, है!

परमाणु, यह लड़की जिधर इशारा कर रही है, उस दिशा में परमाणु ब्लास्ट छोड़ो!
उसका क्या फायदा है नागराज! यह फिर अपने ऊर्जा शरीर का चार्ज बदल लेगा, और वह परमाणु ब्लास्ट मुझे ही खाना होगा!
नहीं परमाणु! समझाने का वक्त नहीं है! जो मैं कह रहा हूं, वह करो! मेरे पास एक योजना है!

परमाणु को नागराज पर पूरा विश्वास था-
उसके ब्लास्ट की परमाणु धूल ने अल्फा मैन की अदृश्य हो गई आकृति को एक बार फिर स्पष्ट कर दिया-

और फिर वही हुआ, जिसका परमाणु को पूरा आभास था-
हरू ऊर्जा का चार्ज बदला-
और परमाणु अपना ही ब्लास्ट खाकर चीख उठा-

लेकिन अब तक नागराज अपनी योजना पर अमल शुरू कर चुका था-
परमाणु ने अपना काम कर दिया है! अब मुझे अपना काम करना है। काम खतरनाक है! मेरी जान भी जा सकती है! लेकिन करोड़ों की जिन्दगी बचाने के लिए मुझे अपनी जिन्दगी को दांव पर लगाना ही पड़ेगा!
अब मैं अल्फा मैन के बराबर की ऊंचाई पर पहुंच चुका हूं! अब जब मैं अपने शरीर को इच्छाधारी कणों में बदलूंगा तो उसमें मेरे शरीर में कैद हरू ऊर्जा भी मिश्रित होगी! जब मेरा यह हरू ऊर्जा का रूप...
...विपरीत हरू ऊर्जा वाले अल्फा मैन के शरीर से टकराएगा तो दोनों ऊर्जाएं एक दूसरे को नष्ट करने लगेंगी! और कोई एक ही रूप जिन्दा बच पाएगा! या तो अल्फा मैन का या मेरा!
जैसे बिजली के पॉजिटिव और निगेटिव चार्ज वाले तारों के मिलने से चिंगारियां उड़ती हैं, वैसी ही चिंगारियां नागराज के इच्छाधारी रूप और अल्फा मैन के ऊर्जा रूप के टकराने से भी उड़ीं-
कुछ पलों तक दोनों के तड़पते हुए अदृश्य रूप चिंगारियों से चमकते रहे-
किसी एक रूप को ही बचना था-
और यह रूप नागराज का था-
ओफ! अल्फा मैन का हरू रूप नष्ट हो गया! शक्ति के देव शक्ति वाले वारों ने इसके अंदर की हरू ऊर्जा को इतना कम कर दिया था कि नागराज के अंदर की ऊर्जा उस पर भारी पड़ गई! ये शक्ति ही है इस हार का कारण!
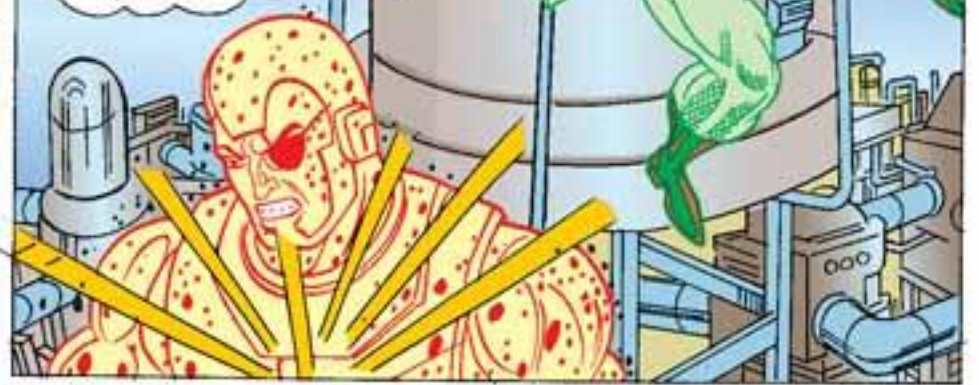
जाने की भी जरूरत नहीं है! क्योंकि मेरा एक हरू प्राणी तो मेरा काम करने के लिए वहां पर मौजूद है! नागराज!

कमाल है! यह ख्याल मुझे पहले क्यों नहीं आया! नागराज से ज्यादा खतरनाक हरू प्राणी तो कोई हो ही नहीं सकता! मैं भी नहीं! अभी नागराज पर मैं अतिरिक्त हरू शक्ति छोड़ता हूं!

दिल्ली में- हरू शक्ति नष्ट होते ही इस शक्ति के कारण अल्फा मैन के शरीर से बाहर निकला उसका मानस रूप फिर से अल्फा मैन के शरीर में समा गया-

और दोनों रूपों के एक होते ही-

अचानक से शरीर में बढ़ गई हरू ऊर्जा की इस मात्रा से नागराज संभल नहीं पाया-
ये... ये क्या हो रहा है? नागराज का रूप क्यों बदल रहा है?
इस पर हरू शक्ति का वार हुआ है, परमाणु! इसके अन्दर पहले भी हरू शक्ति थी! कैसे, यह मुझे पता नहीं, लेकिन मुझे उसका आभास हो रहा था!
तू नागराज के माध्यम से जो कुछ भी कह रहा है हरू, उसे करके दिखा! तेरे कुछ कर पाने से पहले ही मैं नागराज के अंदर भरी तेरी हरू शक्ति को अपनी देव-शक्ति से काट दूंगी!
तू इस ग्रह पृथ्वी पर देवशक्ति की प्रतिनिधि है शक्ति! और अब मैं हरू शक्ति का प्रतिनिधि हूं! तुझे समाप्त करके मैं यह सिद्ध कर दूंगा कि हरू से देव-शक्ति टक्कर नहीं ले सकती!
तू भूल रही है शक्ति कि तेरी देव शक्ति का एक बड़ा हिस्सा अल्फा मैन से लड़ने में नष्ट हो चुका है! और जो कुछ भी थोड़ी बहुत देव शक्ति तेरे अंदर बची है, वह नागराज की हरू शक्ति का मुकाबला नहीं कर सकती!

आऽऽऽह! इस हरू के पास तो हरू शक्ति का भंडार है! और मेरी देव शक्ति सीमित है! मुझे नष्ट हुई देव शक्ति फिर से प्राप्त हो तो जाएगी, लेकिन उसके लिए मुझे थोड़ा और वक्त चाहिए!
वो वक्त तुमको हम देंगे शक्ति! हम नागराज को तब तक रोक कर रखेंगे, जब तक तुम्हारी पूर्ण शक्ति वापस नहीं आ जाती!
इसको सिर्फ रोकना ही नहीं है तिरंगा, बल्कि इसमें समाई हरू शक्ति को नष्ट भी करना है! यह शक्ति धीरे-धीरे नागराज पर हावी हो रही है! थोड़ी देर में नागराज पूरी तरह से हरू बन जाएगा!
नागराज को रोकना वैसे ही मुश्किल था-
और अब तो हरू शक्ति ने उसे अजेय बना दिया था-
धड़ड़ड़ड़ममममममममम
ओह! इतने भीषण वार को भी नागराज आराम से झेल गया!
आऽऽऽह! मैं नागराज पर और ज्यादा घातक वार नहीं कर सकता! क्योंकि ऐसा कोई भी वार नागराज को ही नुकसान पहुंचाएगा! हरू शक्ति को खत्म करने के चक्कर में हमारा दोस्त नागराज ही खत्म हो जाएगा!
धड़ाक

और इससे यह सिद्ध हो जाएगा कि देव शक्ति, हरू शक्ति से बहुत निम्न स्तर की शक्ति है, और ब्रह्मांड में सृष्टि रचने का अधिकार सिर्फ हरूओं के पास होना चाहिए, देवों के पास नहीं!

आऽऽऽह! इसकी हरू शक्ति फिर से मेरी संभाली हुई देव शक्ति को नष्ट कर रही है! और अगर मैं नागराज के शरीर में पहुंच गई, तो मेरे साथ-साथ चंदा का अस्तित्व भी मिट जाएगा। ....जिसके जरिए मैं दूसरों की रक्षा करती हूं, मैं उसी की रक्षा नहीं कर पाऊंगी!

शक्ति के अनुसार नागराज पहले भी हरू ऊर्जा को अपने अंदर समेट चुका है! यह काम वह दुबारा भी कर सकता है! अपने ऊपर हावी हो रही हरू ऊर्जा पर वह खुद भी हावी हो सकता है! सिर्फ उसकी आत्मा को झिंझोड़ने की जरूरत है! हम ऐसा क्या कर सकते हैं, जिससे नागराज की आत्मा चीख उठे?

उस तरफ!

नागराज अंकल! रुक जाइए! आप तो सबको बचाते हैं! फिर आप शक्ति आंटी को क्यों निगल रहे हैं?

पलभर के लिए नागराज ठिठक गया! शक्ति पर उसकी पकड़ ढीली पड़ गई–

मैं कर सकती हूं अंकल! नागराज अंकल बच्चों से बहुत प्यार करते हैं! वे मेरी बात जरूर मानेंगे! बताइए कि वे किधर हैं?

ये अंधी बच्ची फिर टांग अड़ा रही है! नागराज की भावनाओं को उकसा रही है! इंसानी भावनाओं के आगे मेरी हरू शक्ति बेकार है! यह मैं डोगा वाली घटना में देख चुका हूं! दुबारा ऐसा नहीं होगा! हरू शक्ति के कारण नागराज के अंदर घुसा शैतान बाहर नहीं निकलेगा!

नागराज ने जिन्दगी में पहली बार आज किसी मासूम पर वार किया था-

बच्ची के शरीर पर भी चोट लगी थी, और दिल पर भी-

और बच्चों के साफ दिल की बात, जुबान पर भी तुरंत आ जाती है-

आ... आपने मुझे क्यों मारा नागराज अंकल? मैं तो कोई शैतानी... (सुबुक) नहीं कर रही थी!

आपने कभी किसी की जान नहीं ली है नागराज अंकल! सभी ऐसा कहते हैं! आपने कसम खाई है। फिर आप... (सुबुक) शक्ति आंटी को मार कर... अपनी कसम क्यों तोड़ रहे हैं! (सुबुक) अपनी कसम मत तोड़ो अंकल! मत तोड़ो!

मासूम बच्चे की सिसकियां तो पत्थर तक को धड़का सकती हैं! फिर ये तो नागराज का दिल था, जो शैतानों के लिए तो पत्थर था, लेकिन बच्चों के लिए मोम से भी मुलायम था-

सिसकियों के साथ-साथ अपनी कसम याद कराने की अदा ने नागराज की उस शख्सियत को झिंझोड़ डाला था-

जो हरू शक्ति के बोझ तले दबी थी-

लेकिन अब नागराज को कोई ताकत दबा नहीं सकती थी-

जो तिरंगा ने सोचा था, ठीक वैसा ही हो रहा था। नागराज की अंतरात्मा को हिला डालने वाली घटना घट चुकी थी-

और नागराज की अदम्य इच्छा शक्ति, हरू शक्ति पर हावी हो रही थी-

नागराज सामान्य हो रहा था-

वाह बेटी! मान गए तुझे! तूने जैसा कहा था, वैसा ही कर दिखाया!

ओफ, ये इंसानी भावनाएं! क्यों इतनी शक्तिशाली होती हैं ये इंसानी भावनाएं! एक बच्ची की सिसकी ने मेरी हरू शक्ति को दबा डाला! हार गया मैं! हार गई हरू शक्ति, इस सृष्टि के मानव से!

लेकिन अगर हरू शक्ति हारेगी तो देवशक्ति को भी हारना होगा! हरू अगर डूबेंगे सनम, तो देवों को भी ले डूबेंगे! मैं नष्ट कर दूंगा इस देव सृष्टि को! ऐसा विनाश ऐसा कोहराम मचाऊंगा कि यहां पर दुबारा कभी कोई सृष्टि पनप ही नहीं पाएगी। नष्ट हो जाएंगे मानव और सारी अन्य जीवित प्रजातियां! ये जमीन पर चलने वाले पशु, पानी में तैरने वाली मछलियां, हवा में उड़ने वाले पक्षी, ये सारे पेड़, पौधे, वनस्पतियां! सब कुछ! हर जिन्दा चीज नष्ट हो जाएगी! अरे! अरे! अभी-अभी मैंने क्या कहा?

लेकिन इनका तो सबसे बड़ा दुश्मन मानव ही है! उसने हर जगह के पेड़-पौधे काट दिए हैं! अब इतनी तादाद में मुझे पेड़-पौधे कहां मिलेंगे, जिनसे मैं कोहराम मचवा सकूं! हां! वह स्थान मुझे नजर आ रहा है! यहां पर पेड़ों का एक विशाल समूह है! मानव इसे 'जंगल' कहते हैं! लेकिन इस स्थान का नाम क्या है? हां... आसाम! आसाम कहते हैं इसको! अब आसाम से शुरू होगी इस सृष्टि की शाम! अन्त की शुरुआत!

आसाम- प्रकृति की गोद में पलता एक मनोरम, शांत मगर विस्फोटक प्रांत। जिसकी राजधानी गौहाटी के चांद से चेहरे पर आतंकवादियों और अलगाववादियों ने दाग लगा रखा है-

आसाम, असमियों का है! और जो भी बाहर वाला यहां पर आकर रहना चाहेगा, उसे टैक्स देना होगा! तू विदेशी है हमारे लिए! निकाल टैक्स पांच लाख रुपया!

ले...लेकिन इतना पैसा मेरे पास नहीं है! वैसे भी मैं विदेशी नहीं हूं! मैं तो यहां पर बीस साल से रह रहा हूं!

बीस साल से रहे या पचास साल से! तू विदेशी है, और विदेशी हर्जाना नहीं देगा, तो मरेगा!

हे भगवान, तू ही कुछ कर! समझ दे इनको, या जिन्दगी बख्श मेरी! क्यों एक निरपराध की हत्या होते देख रहा है?

कहते हैं कि भगवान के घर देर चाहे हो, पर अंधेर नहीं है-

लेकिन यहां पर तो न अंधेर था और न ही देर थी-
अबे, अबे! य...यह क्या हो रहा है? किसी ने गटर में खाद बहा दी है क्या?
बचाओ गुरू! मेरी तो हड्डियां कड़क रही हैं!
पूरी गौहाटी में यही दृश्य उपस्थित हो रहा था-
इमारतों के जोड़ों में जड़ें घुस-घुसकर उनको ढहा रही थीं-

सड़कों का नामोनिशान मिट रहा था! चारों तरफ कोहराम मच रहा था-
लेकिन इस मुसीबत से निपटने का रास्ता किसी को सूझ नहीं रहा था-
हीं हीं हीं! इस विनाश को देखने में मजा आ रहा है! पहले वनस्पतियां इस सृष्टि को नष्ट करेंगी...
...और फिर वनस्पतियों को मैं नष्ट करूंगा! अब यह कोहराम फैलेगा पूरी पृथ्वी पर! फैल!

इस मुसीबत का केन्द्र अभी तक शांत था! ठीक वैसे ही, जैसे तूफान के केन्द्र में एकदम शांति होती है-
ये तो मैं भी मांगता हूं!
देखा, कोबी! कितने शांत होते हैं ये पेड़-पौधे! इनमें भी जीवन होता है। लेकिन ये सिर्फ देते हैं, मांगते कुछ नहीं! किसी को नुकसान नहीं पहुंचाते! और अगर कुछ मांगते हैं तो सिर्फ थोड़ा सा प्यार!
क्या कहा तुमने कोबी?
कुछ...नहीं! मैं तो यूं ही बड़बड़ा रहा था!

अरे!
अब क्या हुआ?
इस पौधे ने मुझे चूमा! अभी-अभी! सच्ची!

शायद ये तुम्हारे प्यार का जवाब प्यार से देना चाहता होगा! चलो, कम से कम इसने तुम्हारा हाथ तो नहीं पकड़ा!

लेकिन इससे पहले कि कोबी कुछ कर पाता-

उसके शरीर से भी जटाएं आकर लिपट गईं

आऽऽह! यह क्या हो रहा है? अक्! असंभव, सच होता नजर आ रहा है! जटाएं मेरे गले पर आकर कस गई हैं! मैं 'हे भेड़िया देवता मदद' भी नहीं चिल्ला सकता! अक्! अब क्या करूं?

हां, मैं अपनी पूंछ जरूर बढ़ा सकता हूं!

और अपने शरीर को इस पेड़ के तने के पास ले जा सकता हूं, जिसकी जटाएं मुझे जकड़े हुए हैं!

पेड़ के चिरते ही कोबी पर से भी जटाओं की पकड़ ढीली हो गई, और जेन पर से भी-

जेन! कोबी!
अब क्या हुआ? जरा सा मैं तुमसे मिलने क्या चला आया जेन, पेड़ पौधे, इंसान, सबको तकलीफ होने लगी है! अगर ये भेड़िया हुआ तो कसम गदा की, आज मैं उसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा!
लेकिन आने वाला भेड़िया नहीं—
कोई और था—
फूजो बाबा! आज भेड़िया-भेड़िया बुलाना छोड़कर कोबी-कोबी क्यों चिल्ला रहे हो?
क्योंकि भेड़िया सात कबीलों की शांति सभा में गया हुआ है! दो कबीलों का झगड़ा मिटाने!
छोड़ो न कोबी! पर आप हमको ढूंढते हुए क्यों चले आए बाबा?
क्योंकि इस संसार पर मुसीबत टूट पड़ी है जेन! और वह भी हमारे जंगल के कारण!
हमारे जंगल में पाए जाने वाले पेड़ों की जड़ें यहां से हजारों किलोमीटर दूर के शहरों तक पहुंच चुकी हैं! और वे इमारतें व सड़कें तोड़कर नगरों को तबाह कर रही हैं!
यह आपको कैसे पता चला?
कई पक्षी अलग-अलग स्थानों से यह सूचना लेकर मेरे पास आए हैं! लेकिन इस मुसीबत का कारण मैं खोज नहीं पा रहा हूं! पेड़ों की शाखाएं, लताएं और जटाएं, पशुओं को बेरहमी से मार रही हैं!
यानी जंगल ही जंगल का विनाश करने पर उतारू हो गया है! लेकिन जंगल के रखवाले कोबी के रहते ऐसा कभी नहीं होगा!
मैं ढहा दूंगा, उन दुष्ट वृक्षों को जो जंगल को वीरान कर रहे हैं।
हे भेड़िया देव, मदद?
भेड़िया देव का प्रलयंकारी शस्त्र, कोबी के हाथ में प्रगट हो गया—
और 'विनाश की कुल्हाड़ी' बनकर वृक्षों पर गाज की तरह गिरकर, उनको धूल में मिलाने लगा—
धममम
रुक जाओ, कोबी! पेड़ विनाश का कारण नहीं हैं! कारण है इनमें एकाएक आ गई वह अद्भुत शक्ति जो इनसे ऐसे काम करा रही है!

इस सांप ने क्या बताया, फूजी बाबा?

नहीं कोबी! यह तुम्हें कुछ बता रहा है! हां... हां! ओह! समझा! तुम घबराओ मत! सब ठीक हो जाएगा!

कुछ अद्भुत हो रहा है! जमीन के बहुत नीचे रहने वाले इस अंधेरिया सर्प ने बताया है कि सभी पेड़ों की जड़ें तेजी से एक ही दिशा में बढ़ रही हैं! वे कहां जा रही हैं... इसका तो सर्प को पता नहीं था, लेकिन यह पता है कि वे जड़ें जहां पर भी जा रही हैं, वहीं पर उस अद्भुत शक्ति का वास है!

अब उस स्थान का पता कैसे चलेगा?

बहुत आसान है फूजी बाबा! सभी पेड़ों की जड़ें एक ही दिशा में जा रही हैं न? तो इस पेड़ की जड़ भी वहीं पर जा रही होगी! अभी उखाड़ लेता हूं इस पेड़ को और इसकी जड़ को वहां तक उखाड़ता जाऊंगा, जहां तक मुझे इसका अन्त नहीं मिल जाए!

धड़ड़

तुम्हारा तरीका भी तुम्हारी ही तरह हिंसक है कोबी, पर है कारगर!

और इसी वक्त राजनगर में-

CAMERA REPAIRI

हमारे यहां हर प्रकार के कैमरे ठीक कि

NIKON YASHIKA OLYMPUS KODAK

25% DISCOUNT ON ALL SPARES

ये कैमरा! हां, हां! इसे मैंने देखा तो है! शायद ठीक भी किया है! अभी पुरानी रसीद बुकें चेक करता हूं! उसमें इसको ठीक करने की रसीद भी होगी, और इसके मालिक का नाम पता भी!

गुड! जरा जल्दी चेक कीजिएगा, प्लीज!

लेकिन इसमें तो रील भरी हुई है! एक्सपोज्ड! खिंची हुई! इसका क्या करना है?

श्वेता, ये रील ले जा, और इसको तुरन्त डेवलप करा! शायद इसके अन्दर ऐसी कोई चीज हो जिससे हमको मदद मिल सके!
ओ. के. भइया! लेकिन तुम ढूंढ क्या रहे हो? मुझे बताते क्यों नहीं?
तेरी समझदानी से ज्यादा बड़ी बात है! तेरे दिमाग में आएगी नहीं! तुझे जैसा कह रहा हूं, बस वैसा ही कर!
और मुझसे स्टार ट्रांसमीटर पर कांटेक्ट कर लेना! अब जा फटाफट!

और वहां से हजारों किलोमीटर दूर- आसाम के जंगलों में-
ये जड़ यहां तक आकर खत्म हो रही है! इस पेड़ के पास!
ऐसे देखने में तो यह पेड़ सामान्य सा ही लग रहा है! फिर सारी जड़ें इस तक क्यों आ रही हैं?

क्योंकि जो कुछ भी गड़बड़ है, वह जमीन के अन्दर है जेन! लेकिन अन्दर जाने का रास्ता कहीं नहीं है!
है, फूजी बाबा! ये जड़ इतनी मोटी है कि अगर मैं इसको...

...जड़ से उखाड़ दूं तो इतनी चौड़ी सुरंग तैयार हो जाएगी, जिसमें मुझ जैसा मुस्टंडा भी आराम से घुस सके!... अब मैं देखकर आता हूं कि इस मुसीबत की जड़ में क्या है?

भेड़िया का शरीर मिट्टी की भुरभुरी दीवारों से टकराता हुआ नीचे फिसलता चला गया-
और थोड़ी देर बाद ही-

उसका फिसलना तो रुक गया, लेकिन आंखों का फटना नहीं रुका-

सामने दिख रहा दृश्य था ही इतना विस्मयकारी-
आश्चर्य है! यकीन नहीं होता! चारों तरफ से विभिन्न वृक्षों की जड़ें आकर इस बड़ी सी चमकती गांठ में जुड़ी हुई हैं! और इस हलचल के कारण यहां की मिट्टी इतनी हट गई है, कि इसके द्वारा बनी जगह में मैं आराम से खड़ा हो सकता हूं!
अब मेरा एक ही काम है! इस गांठ में जो चमकती दुष्टता भरी है, उसको गांठ की खोपड़ी तोड़कर बाहर निकालना!
और यह काम मेरी दिव्य गदा बड़ी सुगमता से कर सकती है-
गदा और गांठ का मिलन होते ही-
वह अंधेरा स्थान, चिंगारियों की चमक से चमक उठा-
ओह! इसकी गदा की दिव्य शक्ति वृक्ष की कोख में भरी हुई शक्ति को नष्ट कर रही है! इसको यह मौका नहीं देना है!
कीबी को अगला वार करने का मौका नहीं मिला-
ओह! ये जड़ें मुझ पर शिकंजा कस रही हैं! और... और मेरी गदा भी छीन कर ले जा रही हैं!
आऽऽह! यह शिकंजा तो मेरी हड्डियां तोड़े दे रहा है!
गदा मारने से इस गांठ की चमक कुछ कमजोर पड़ गई थी! यानी मेरी गदा की शक्ति इस गांठ की दुष्टता को नष्ट कर रही थी! मुझे यह बात पहले ही समझ जानी चाहिए थी, और एक भरपूर वार करना चाहिए था! पर अब तो मौका हाथ से निकल गया है! गदा तक मैं पहुंच नहीं सकता, और इस शिकंजे से मरने से पहले मैं छूट नहीं सकता!

लेकिन कोबी मरेगा नहीं! और गदा भी वापस लेगा! क्योंकि मैं बंधन में जरूर हूं, लेकिन मेरी पूंछ अभी आजाद है!
कोबी की पूंछ बढ़कर गदा पर जा कसी-
और रस्साकसी की एक प्रतियोगिता भी शुरू हो गई। जिसमें हारने का अर्थ था जीवन का अंत-
लेकिन कोबी ने सिर्फ मारना सीखा था-
मरना नहीं-
एक झटके से जड़ उखड़ गई, और गदा पर कोबी की पूंछ और कस गई-
और इससे पहले कि हरू कोई नई चाल सोच पाता-
पूंछ के एक ही घुमाव ने गदा को प्रक्षेपास्त्र की सी गति से, गांठ के अंदर तक धंसा दिया-
दो विपरीत शक्तियां, आपस में टकरा उठीं-
और एक तेज चमक के साथ, गांठ का नामोनिशान मिट गया-
जड़ों की ऊर्जा मिलनी बंद होते ही वे फिर से निष्क्रिय होने लगीं-
और-
खतरा टल गया है! फूजो बाबा! अब कोबी-कोबी मत चिल्लाना! चलो जेन, हम फिर से घूमकर आते हैं!

शक्ति को बढ़ाकर ? मैं कुछ समझी नहीं !

हमारी बड़ी शक्ति हमारी एकजुटता है शक्ति ! हमको उन सभी को साथ लेकर जाना चाहिए, जिन्होंने हरू शक्ति से टक्कर ली है, और उस पर विजय प्राप्त की है !

मैं समझ गई ! तुम ध्रुव, डोगा, स्टील, और एंथोनी की बात कर रहे हो ! ठीक है ! मैं सबको लेकर ही वहां पहुंचूंगी !

राजनगर में-

मिल गया ध्रुव ! यह कैमरा हमारे यहां ही ठीक हुआ है । मालिक का नाम रमेश खन्ना है ! पता है, 201, गुलाब चौक, महानगर ३४००१३ !

शक्ति ने ध्रुव को तो ले लिया था, लेकिन अभी स्टील, डोगा और एंथोनी को लेने में उसको शायद कुछ पलों का वक्त और लगना था—
और इस दौरान पृथ्वी का वातावरण तेजी से विषैला हो रहा था—
जेन ! ये तुमको क्या हो रहा है ?
हवा में ये अजीब सी महक कैसी है ?
वुल्फानो वासी होने के कारण कोबी पर जहर का असर देर से होना था ! लेकिन जेन तो मानव थी—
क्या बात है कबाब में हड्डियों ? अब तुम मुझे तंग करने चले आए ! क्यों ?
क्या कहा पहाड़ियों की तरफ से जहरीली हवा बह रही है ! पशु मर रहे हैं ! कोबी ऐसा नहीं होने देगा !
जेन को नुकसान पहुंचाने वाले को कोबी चीर कर रख देगा !
कोबी जानता नहीं था कि वह किससे टक्कर लेने जा रहा है—
लेकिन हरू भी यह नहीं जानता था कि उसकी टक्कर किनसे होने वाली है—
बन्द कर सृष्टि का ये विनाश, दुष्ट हरू !
आऽऽऽह ! अब कौन... ? अच्छा तो तुम सब हो ! सुपर हीरोज और शक्ति ! एक साथ !

और तुम समझते हो कि तुम्हारी संयुक्त शक्ति के सामने मैं टिक नहीं पाऊंगा ?
हां ! हम यही समझते हैं !
तो फिर देखो हरू शक्ति की ताकत !
हरू शक्ति का प्रहार करने के लिए हरू का शरीर तना—
और फिर ढीला पड़ गया—
आऽऽऽह ! ये मेरे शरीर में क्या आ धंसा है ? ये... ये तो वही गदा है !

इंस्पेक्टर स्टील और भेड़िया की टक्कर के बारे में जानने के लिए पढ़ें: आधे इंसान

★ इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: किरीगी का कहर

ऐसा नहीं होना चाहिए, नागराज! क्योंकि हरू फिर से पृथ्वी के वातावरण को विषैला बना रहा है! ध्रुव, तुम बताते क्यों नहीं कि ऐसी परिस्थिति से तुम पहले कैसे निपटे थे?
हम समान शक्ति रखने वाले, अपने ही प्रतिरूपों से लड़ेंगे तो जीत हार का फैसला शायद कभी नहीं होगा! ऐसी परिस्थिति पहले आने पर हमने अपने-अपने प्रतिद्वंद्वियों को बदल लिया था! पर उस वक्त हम सिर्फ तीन थे! अभी तो हमारे नौ प्रतिरूप हैं! मेरे ख्याल से हमको दो-दो के ग्रुप में अपने-अपने प्रतिद्वंद्वियों को चुनकर उनका सामना करना चाहिए!
स्टील और डोगा, तुम कोबी और तिरंगा के प्रतिरूपों को संभालो! मैं और कोबी, नागराज तथा परमाणु के प्रतिरूपों से निपट लेंगे!
नागराज और परमाणु, स्टील एवं शक्ति के प्रतिरूपों से भिड़ेंगे, और बचे शक्ति, तिरंगा और भेड़िया संपोली, वे मेरे संपोली और डोगा के प्रतिरूपों से निपट लेंगे!
मैं कुछ नहीं समझा! मुझे तो सीधी सादी हिन्दी में ये बताओ कि मुझे किसका खून पीना है?
समस्क गास!
तुमको परमाणु का 'खून पीना' है कोबी! पीली और हरी पोशाक वाले का! और अगर लड़ाई जल्दी जीत लेंगे, तो औरों का भी खून पीने को मिलेगा!
कोबी लड़ाई जल्दी ही जीतता है!

घबराओ मत कीवी ! यह लड़ाई जल्दी ही जीती जाएगी ! क्योंकि इस लड़ाई को तुम अकेले नहीं लड़ोगे ! मैं भी तुम्हारा साथ दूंगा !
और इस दौरान मैं डुप्लीकेट स्टील से लड़ने के साथ-साथ यहां के वातावरण में फैल रहे ज़हर को पीकर नष्ट भी करता रहूंगा ताकि हममें से किसी पर उस ज़हर का असर न हो !
धमममम
नागराज ने खाली होते ही-
अपना ध्यान अपने प्रतिद्वंदी स्टील की तरफ मोड़ दिया-
नागराज, जल्दी जीतना ! डुप्लीकेट शक्ति से निबटने में मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत पड़ सकती है !
मदद की जरूरत तो मुझे भी पड़ेगी परमाणु ! क्योंकि स्टील घातक रॉकेटों और ग्रेनेडों का इस्तेमाल करता है, और मुझको इन चीजों से नुकसान पहुंच सकता है ! आखिर मैं बार-बार कब तक इच्छाधारी कणों में बदलता रहूंगा !
तड़ाक
बममम
इसमें मैं तुम्हारी मदद करूंगा नागराज ! मैं दोनों ब्रेसलेटों से परमाणु ब्लास्ट छोड़ सकता हूं !
एक साथ !

स्टील और डोगा की जोड़ी तिरंगा- प्रतिरूप और कोबी प्रतिरूप से उलझी हुई थी-

तिरंगा की ढाल किसी मजबूत मेटल कंपाऊंड की बनी हुई है!

मेरे ब्लास्ट इसकी नकल तक को भेद नहीं पा रहे हैं!

आऽऽह! इसकी पूंछ की जकड़ तो अजगर की कुंडली से भी ज्यादा शक्तिशाली है! अब इसकी गदा मेरा सिर फोड़ देगी, और मैं कुछ भी नहीं कर पाऊंगा!

उससे तो तू निपट ही लेगा! लेकिन ध्रुव की मुझसे कौन सी दुश्मनी थी, जो उसने मेरे पल्ले इस खूंखार को बांध दिया! इसके सिर पर तो खून सवार है!

स्टील ऐसा नहीं होने देगा! तू कानून का गुनाहगार है, इसीलिए कानून ही तुझे पकड़ सकता है कोबी नहीं! अब दुम से बचकर रहना!

जैसे परमाणु का ध्यान शक्ति प्रतिरूप पर से हटा था, वैसे ही स्टील का ध्यान तिरंगा- प्रतिरूप पर से हट गया था-
ढाल के नुकीले नेजे हवा को काट रहे थे-
और हवा के बाद बारी-
स्टील के सिर की थी-
लेकिन-
शुक्रिया कर स्टील! मैंने तुझे डोगा को पकड़ने का एक मौका दिया है! तुझे जिन्दा रखकर!
इससे भी भीषण टकराव पहाड़ियों के दूसरी तरफ हो रहा था-
ये मुर्दा बनकर मेरी शक्ति की सीमा से बाहर निकल गया है! अब इस पर मृत्युदेव का हक है! इसीलिए मेरे वार इस पर कारगर सिद्ध नहीं हो रहे हैं! सिर्फ इसकी हरू शक्ति की ही काट पा रहे हैं!
तुम मेरे प्रतिरूप की आड़ में मेरी ही बात कर रही हो शक्ति! वैसे तो मेरा दिल निकालकर मुझे नष्ट किया जा सकता है, लेकिन हरू ने इसके अन्दर दिल लगाया ही नहीं है!

ओह! यह मैं अपने बड़बोलेपन में क्या कह गया? मैं तो भूल ही गया था कि मेरा प्रतिद्वंद्वी 'ध्रुव-प्रतिरूप' है! अब यह मुझे मारने का सीक्रेट जान गया है, और सीधे मेरे दिल के स्थान पर ही वार कर रहा है!
ढढ़ढ़ाम
तुम तो टेलिपोर्ट होकर बच जाओगे स्टील! लेकिन डोगा-प्रतिरूप तो मुझे इस दुनिया से ही टेलिपोर्ट कर देगा! यह तो सिर्फ गोलियों की जबान जानता है, और यह भाषा मुझे आती नहीं!
लड़ो, लड़ो! लड़ते रहो! ताकि मैं शांति से इस सृष्टि का सफाया कर सकूं!
लड़ाई की गति तेज हो रही थी! मामला आर-पार की हद तक पहुंच रहा था-
ये परमाणु तो इधर-उधर उड़ता ही जा रहा है! मेरी गदा का हर वार चूक जा रहा है!
अपनी दुम का इस्तेमाल करो कोबी!
ठीक वैसे ही जैसे तुम्हारे प्रतिरूप ने अभी डोगा को जकड़ लिया था!

ध्रुव जानता था कि एक बार बंधन में बंधने के बाद परमाणु - प्रतिरूप क्या करेगा-
उसने वही किया-
परमाणु प्रतिरूप इस शिकंजे से बचने के लिए परमाणु कणों में बदलेगा, और मुझे सिर्फ यह देखना है कि वह कौन सा बटन दबाकर कणों में बदलता है!
ध्रुव की तेज नजरों से वह बटन बच नहीं सका-
और अगले ही पल- परमाणु के वापस नजर आते ही, वह बटन ही नहीं बचा-
अब यह गायब नहीं हो पाएगा कोबी! दुम को फिर से बढ़ाओ!
हां! गदा के चक्कर में अपनी दुम की शक्ति को तो मैं भूल ही जाता हूं!
कोबी की पूंछ बढ़ने की गति तो बिजली को भी मात दे सकती थी-
शिकंजे में आते ही परमाणु प्रतिरूप को कोबी की दुम ने नीचे ला घसीटा-
और फिर गदा के एक ही प्रहार ने परमाणु-प्रतिरूप के टुकड़े-टुकड़े कर दिए-

थोड़ी दूर पर- एक और युद्ध नतीजे पर पहुंच रहा था-

यार, ये कोबी तो काबू में नहीं आ रहा है! मेरी गोलियों की बौछार को अपनी गदा से ऐसे समेट रहा है, जैसे कूड़े को झाड़ू समेट देती है!

कोई ऐसा वार करना होगा, जिसे यह देख न पाए, तभी बात बन सकती है!

तड़. तड़. तड़. तड़. तड़. तड़.

तब तो समझो कि बात बन गई!

एक स्थिति ऐसी होती है, जिसमें कोई भी इंसान या पशु, आंखें खुली रख ही नहीं सकता! और वह स्थिति है, छींकने की स्थिति!

वो तो नसवार से आती है! यहां आस-पास कोई दुकान है क्या?

अपनी गोलियों का इस्तेमाल नसवार की डिबिया की तरह कर लो!

समझ गया!

कोबी प्रतिरूप के वारों को झुकाता हुआ डोगा, उसके पास तक पहुंचा-

और उसी पल, गोली का बारूद, कोबी प्रतिरूप की नाक में आ घुसा-

बारूद नाक में जाते ही छींक तो आनी ही थी-

और छींक आते रहने तक आंखों को खोले रख पाना असंभव था-

आक छीं

अब वहशी बनने की बारी डोगा की थी-

एक ही जोरदार धक्के से कोबी प्रतिरूप की आकृति गहरी खाई में गिरती चली गई-

ताड़ड़ड़

और एक धमाके के साथ उसके टुकड़े बिखर गए-

स्टील ने भी तिरंगा प्रतिरूप से निपटने का रास्ता खोज निकाला था–
इसकी ढाल ही इसकी मुख्य शक्ति है! यह मुझ पर वार करके हर बार इसके हाथों में पहुंच जा रही है! और मैं बचने के अलावा कुछ नहीं कर पा रहा हूं!
लेकिन इस बार जब ढाल मुझे पार करके वापस इसके हाथों की तरफ बढ़ेगी!....
...तो मैं अपनी स्टील लाइन से इसके शरीर को कसकर...
...इसके हाथों के बजाय इसके शरीर को ही नाचती ढाल के सामने कर दूंगा! और अपनी ढाल के वार से ये भी नहीं बच पाएगा!
नुकीले नेजों वाली ढाल, तिरंगा-प्रतिरूप का शरीर दो भागों में काटती चली गई–
इसी दौरान एक महायुद्ध भी आर या पार की हद तक पहुंच रहा था–
स्टील-प्रतिरूप पर तो मेरी फुंकार का असर होने से रहा, क्योंकि यह एक मशीन है! लेकिन मेरे सूक्ष्म सर्प इसके कंप्यूटरीकृत पुर्जों को जरूर खराब कर सकते हैं! शॉर्ट सर्किट करके!
नागराज की सर्प सेना सूक्ष्म रूप में, कंप्यूटर चिप्स से चिपक कर शॉर्ट सर्किट करने लगी–
और स्टील प्रतिरूप झटके खाने लगा–
नागराज को वह मौका मिल गया था, जिसकी उसे तलाश थी–
नाग शक्ति से भरे एक ही वार ने स्टील के सिर को धड़ से अलग कर दिया–
एक लड़ाई और जीती जा चुकी थी–
कड़ाक
लेकिन कुछ लड़ाइयों में निर्णय होना अभी बाकी था–
अरे! यहां पर किसका मैसेज आ रहा है, मेरे स्टार ट्रांसमीटर पर?

श्वेता बोलती चली गई–

व्हाट? तू... तुम सच कह रही है क्या? यानी यानी वह कैमरा ऑटोमैटिक मोड पर फोटो खींचता जा रहा था, और फोटोज में...

...बस! बाद में बात करेंगे श्वेता अभी जरूरी काम है! लाइन काट!

लगभग एक किलोमीटर दूर शक्ति, संथोनी प्रतिरूप से उलझी हुई थी–

मैं रात को दिन में बदल सकती हूं! एक नया मिनी सूर्य रचकर! सूर्य आग का एक ऐसा गोला है, जिसमें हाइड्रोजन और हीलियम गैसें फ्यूजन प्रक्रिया से जुड़ती हैं, और भीषण ताप तथा विकिरण पैदा करती है! यहां के वातावरण में हीलियम और हाइड्रोजन है!

बस! मुझे अपने हाथों द्वारा इतना तीव्र दबाव और तापमान पैदा करना है जिससे मेरे हाथों के बीच में फ्यूजन प्रक्रिया शुरू हो जाए, और हाइड्रोजन तथा हीलियम के अणु जुड़ने लगें!

शक्ति ने ताप और दाब बढ़ाया और एक मिनी सूर्य पैदा होने लगा–

और उस सूर्य का ताप और विकिरण संथोनी प्रतिरूप के शरीर को गलाने लगा–

हा हा हा! तरीका कामयाब रहा! सूर्य की रोशनी में मुर्दे इसीलिए बाहर नहीं घूम सकते, क्योंकि उस ताप से उनका शरीर कुछ ही देर में मोम की तरह गल जाता है! खत्म हो गया है संथोनी प्रतिरूप...

...क्योंकि इस विकिरण से इसकी टेलिपोर्ट शक्ति भी इसे नहीं बचा सकती!

शक्ति! मैं तुमको ढूंढने ही जा रहा था!

मुझे पता था कि तुमको मदद की जरूरत पड़ेगी, इसीलिए मैं खुद ही आ गई!

मदद तो चाहिए शक्ति, लेकिन नागराज से निबटने के लिए नहीं! ध्यान से सुनो! पता नहीं कि मैं दुबारा बताने लायक रहूं भी या नहीं!

ध्रुव से संक्षेप में पूरी स्थिति समझते ही शक्ति प्रकाश की गति से एक तरफ उड़ चली–

?

नागराज-प्रतिरूप मुझ पर ध्वंसक सर्पों का वार कर रहा है! अब यही वार इसकी हार बनेंगे!

क्योंकि इसके वार चट्टानों के जोड़ को कमजोर करते जा रहे हैं!

इतना कमजोर कि मेरे एक भरपूर प्रहार से ये भारी चट्टान अपने साथ-साथ दूसरी चट्टानों को भी लिए-लिए तेजी से नीचे गिरेगी!

और यहीं पर नागराज के प्रतिरूप की समाधि बन जाएगी!

नागराज-प्रतिरूप ने तो अपनी ही कब्र अपने हाथों, खोद ली थी–

लेकिन शक्ति-प्रतिरूप परमाणु की कब्र खोदने पर तुला हुआ था–

आऽऽऽह! शक्ति तो बहुत शक्तिशाली है! इसके 'अग्निवार' के सामने मेरे परमाणु वार ठहर नहीं पा रहे हैं!

इसको हराऊं तो कैसे? इसकी तो कोई कमजोरी भी नहीं है!

कमजोरी है परमाणु! शक्ति की कमर में लटका 'मुंड' देवलोक से उसका 'संपर्क-सूत्र' है! वही शक्ति और देवलोक के बीच में संपर्क बनाए रखता है। और इसके हटते ही शक्ति को अतिरिक्त देव ऊर्जा मिलनी बंद हो जाती है! लेकिन इसको स्पर्श करना ही घातक है!
इसको स्पर्श न करना और भी घातक होगा नागराज! अगर यही एक मात्र रास्ता है! तो इस पर चलने से मैं पीछे नहीं हटूंगा!
यह काम मैं करूंगा तुम नहीं! क्योंकि इस शक्ति प्रतिरूप के अन्दर देव-ऊर्जा नहीं, हरू ऊर्जा है। और वही ऊर्जा मेरे अन्दर भी है। मैं शायद इस स्पर्श के असर को झेल सकूंगा!
मुंड पकड़ते ही नागराज को एक तेज झटका लगा! लेकिन उसकी मुट्ठी नहीं खुली—
और अद्भुत इच्छा शक्ति का परिचय देते हुए नागराज ने मुंड को शक्ति-प्रतिरूप की कमर से अलग कर दिया—
आऽऽह! वार करो! परमाणु! वार करो!
परमाणु ने अपनी सारी परमाणु शक्ति को समेटकर एक भीषण वार किया—
अब यह चांद से पहले तो नहीं रुकेगी नागराज! और जब तक इसे होश आ पाएगा, तब तक हम हरू देव को ही नष्ट कर देंगे!
और उसके नष्ट होते उसकी सृष्टि शक्ति भी नष्ट हो जाएगी!
हरू ने पहली बार स्थिति पर नजर डाली थी—
ओह! सिर्फ दो प्रतिरूप बचे हैं! यानी मुझे जहर फैलाना छोड़कर खुद मैदान में उतरना पड़ेगा, इन मानवों की मौत का फरिश्ता बनकर!
नहीं हरू! अब तुम किसी पर भी वार करने से पहले इन पर वार करोगे! क्योंकि अब तुम्हारे वार और दुनिया के बीच में खड़ी हैं!...

...रमेश खन्ना की पत्नी और बेटी!
रमेश खन्ना! ये कौन?
रमेश खन्ना वह इन्सान है, हरू जिसके शरीर पर तूने अधिकार कर रखा है! ...अब कर वार, और खत्म कर दे इन दोनों को!
यह क्या चक्कर है ध्रुव?
मैं जब रेगिस्तान की खाक छान रहा था नागराज तो मुझे वहां पर एक कार और एक कैमरा मिला! उसी कैमरे से उसके मालिक रमेश खन्ना का पता मिल गया, और कैमरे में पड़ी रील को डेवलप कराने से ये पता चल गया कि हरूशक्ति ने उसी फोटोग्राफर रमेश खन्ना के शरीर पर कब्जा करके यह रूप धारण किया हुआ है!
यहां पर आते समय रास्ते में तुमने मुझे यह भी बताया था कि कैसे शक्ति को निकालते समय बच्ची की चीख ने तुम्हारी भावनाओं को जगाकर हरू शक्ति को दबा दिया था!
बस, मैंने भी वही किया! शक्ति के हाथों रमेश खन्ना की बीवी और बच्ची को बुलवा भेजा! अब देखना यह है कि रमेश की भावनाएं हरू शक्ति से जीतती है या नहीं!
ध्रुव का अनुमान खरा उतर रहा था—
अब मैं तुझ पर वार करके तेरी हरू शक्ति को नष्ट करूंगी हरू!
मैं तुम्हारे साथ इनको भी खत्म कर दूंगा! लेकिन मैं वार क्यों नहीं कर पा रहा हूं! जैसे एंथोनी का शरीर हरू शक्ति को अपने कोरस पर वार करने नहीं दे रहा था, वैसे ही रमेश का शरीर मुझे रोक रहा है! आऽऽऽह!
शक्ति के वारों का हरू पलटकर जवाब नहीं दे पा रहा है! रमेश की भावनाएं उसे रोक रही हैं!
और इन वारों से तड़पकर वह रमेश के शरीर से अलग होना चाहता है! पर हो नहीं पा रहा है!
ऐसा क्यों?
ऐसा इसलिए ध्रुव क्योंकि हरू शक्ति अपने स्रोत में ही समा सकती है! और उस स्रोत को यह ढूंढ नहीं पा रही है!
स्रोत!
ओह, समझा!
यह बात भला मेरे दिमाग से कैसे निकल गई थी! परमाणु अब तुमको ही यह काम करना पड़ेगा!
फटाफट बोलो, ध्रुव!

शक्ति के घातक वार हरू को बुरी तरह से तड़पा रहे थे! लेकिन उसकी परछाईं बार-बार रमेश के शरीर से अलग होकर, फिर से उसी में समाने के लिए बाध्य हो रही थीं–

आऽऽऽह! ये इंसानी भावनाएं! ये मुझे वार करने से रोक रही हैं!

शक्ति, वार करती रहो! मैं इसका इलाज ले आया हूं!

परमाणु! यह चट्टान इसका इलाज है?

हां, शक्ति! यह वही चट्टान है, जिसमें से निकलकर हरू शक्ति ने रमेश के शरीर को अपने कब्जे में लिया था! और अब यह जाएगा भी तो इसी के अन्दर!

यह तुमको कैसे पता?

ध्रुव ने बताया!

तब तो ठीक है! क्योंकि ध्रुव को इस मामले के बारे में विस्तारपूर्वक पता है!

शक्ति के देव शक्ति से भरे वारों की तीव्रता और बढ़ गई–

और इस पिटाई से बिलबिला रही हरू शक्ति को बचाव का एक ही रास्ता समझ में आया–

हरू, उसी चट्टान में जा घुसा है, और यह चट्टान उसी पुच्छल तारे का हिस्सा है, जो उससे टूटकर अलग हो गया था!

मैं इसको फिर से उसी पुच्छल तारे को वापस करके आती हूं!

रमेश, तुम ठीक तो हो न?

ठीक तो हूं! पर मुझे हुआ क्या था? मैं यहां पर कैसे आ गया?

चलो! हरू शक्ति का आतंक कम से कम चालीस लाख सालों के लिए तो खत्म हुआ! अब वापस चला जाए!

अभी नहीं! हमारे आश्रम से अतिथि कभी भूखा नहीं जाता! आज आप हमारे मेहमान रहेंगे!

समाप्त.